

पाठ	विषय	पृष्ठ
३७	चर्पा और शरद ऋतु का वर्णन (रामायण से) ...	१३४
३८	पुष्पादिका में जानकीजी और रघुनाथजी का समागम (रामायण से)	१३८
३९ (१)	सीताजी का स्वयंवर (रामायण से) ...	१४३
४० (२)	सीताजी का स्वयंवर (रामायण से) ...	१४७
४१	वशिष्ठजी का भरतजी को उपदेश (रामायण से) ...	१५१
४२	भरतजी की भ्रातृभक्ति (रामायण से) ...	१५४
४३	कुरुडलिया बाबा दीनदयाल गिरि कृत (अन्योक्ति- कल्पद्रुम से)	१५८
४४	मिथ प्रतापनारायण कृत (प्रेमपुष्पावली से) ...	१६१
४५	श्रीमती राजराजेश्वरी विकीरिया की स्तुति (मिथ प्रतापनारायण कृत)	१६४

हिंदी-शिक्षावली

पाँचवाँ भाग

पाठ १— निस्पृहता अर्थात् निर्लोक

इंग्लैंड देश के एक धार्मिक मॉन्टेग्यू अत्यंत दयालु और दीन-प्रतिपालक थे। उनको यह रीति थी कि निराधर्य और दीन मनुष्यों के दुख दूर करने के लिए भेस बदल कर फिर करते थे। एक दिन वह बड़े बड़े अनाथों की मंडली में पहुँच गये और एक युढ़िया को सामने देख कर उन्होंने कहा कि आज कल तो बड़ा कुसमय है, तू कैसे अपना निर्वाह करती है, और जो तुझे कुछ आवश्यकता हो तो हम तेरी सहायता करें। यह बोली कि ईश्वर की कृपा से मैं स्वाधीन हूँ और मुझे किसी वस्तु की कमी नहीं है। जो दीन देख कर कुछ देने की इच्छा हो तो इस घर में एक अनाथ रहीं रहती हूँ, उसकी सहायता कीजिए, वह भूख के मारे मरने जाती है।

युढ़िया की बात सुनते ही एक उस घर में घुस गये और उस अनाथ उद्यम-रहित रहीं को कुछ धन देकर फिर उसी युढ़िया के पास आकर कहने लगे कि तेरे और किसी पड़ोसी की कुछ कष्ट हो तो पतला। युढ़िया से दुबारा पूछने से उनका प्रयोजन कुछ देने का था, कि जब इससे पूछेंगे कि और

एक दिन आग लगी। उस समय हवा थड़े घेग से चल रही थी। इस कारण आग की लपट ऐसी बढ़ी कि कितने ही लोग घर से बाहर न निकल सके। अड़ोस पड़ोस वालों ने थड़े कष्ट और कठिनाइयों से कितनों को बाहर निकाला, तो भी बहुतों के भीतर ही रह गये। एक निर्धन स्त्री के करे एक लड़के थे। जब वह पड़ोसियों की सहायता से अपने बच्चों को लेकर घर से बाहर हुई तो वह सोच कर कि आज ईश्वर ने मुझे और मेरी संतान को बचाया, पड़ोसियों की पड़ाई और उनका धन्यवाद करने लगी और अपने प्रत्येक लड़के का नाम ले ले कर प्यार करने लगी। अंत में जब उसने देखा कि सबसे छोटा लड़का नहीं आया, घर के भीतर ही रह गया, वह उसके मोह में घबड़ा कर पागल सी हो गई, यही तक कि प्राण-विनाश की संज्ञा छोड़ जलते घर में घुस गई, परन्तु घबड़ाहट में वह न जान पड़ा कि वह विमर्श कर है।

थोड़ी देर पीछे एक लड़का लेकर बाहर निकल आई और संतान की प्राण-रक्षा समझ कर आनंद में डूब गई। जिस प्रकार घर के भीतर गई और वहाँ से लड़के को लाई, वह तब पान पास के लोगों से कहने लगी। इसके पीछे जब उसने उठा कर लड़के का मुँह चूमा तो जान पड़ा कि वह लड़का किसी दूसरी स्त्री का है जो उसी के घर के पास रहती थी और आग के भय से लड़के को घर में छोड़ कर भाग निकली थी।

जब वह फिर अपने लड़के को लाने के लिए घर के भीतर चली, आग की लपट इतनी बढ़ गई थी कि बाहर और धुआँ के फैल जाने से अभेद्य हो गया। कुछ देर न बढ़ता था, इस कारण वह घबरा कर फिर दूसरे के घर में घुस गई। जब वहाँ जान पड़ा कि वह भी दूसरे का घर है तब तो मोह से

किसी को कुछ कलेश है तो अवश्य अपनी स्थिरता परीक्षा करेगी। बुढ़िया बोली महाराज ! मेरा एक और मला मानुस पड़ोसी बड़ा दुखी है। एक ने कहा तारे समान तिलोत्तमी और सुशील गयी अभी तक मैंने नहीं देनी, जो नू मन में पुरा न माने तो मैं तेरा वृत्तान्त सुना चाहता हूँ। यह बात सुन कर बुढ़िया बोली कि मैं दुखी नहीं और न किसी का कुछ धरती हूँ, अभी तो मेरी गर्ठ में पन्द्रह रुपये हैं।

यह बात सुनकर एक बहुत ही प्रसन्न और विस्मित हुए और मन में बसकी सुशीलता और उदारता की बड़ाई करने लगे। फिर बससे कहा जो इसमें कुछ कलेश न हो तो हम तुम्हें कुछ रुपये दें। बुढ़िया बोली जो आप आज्ञा करने हैं, इसमें मुझे विशेष कलेश तो नहीं है परन्तु मेरे विचार में लेना बड़ा निश्चित काम है। बुढ़िया की ऐसी उदारता देख एक बहुत ही प्रसन्न हुए और बसी समय पांच सोने के सिक्के निकाल उसको हाथ में देकर बोले यह तो तुम्हें अवश्य लेने पड़ेंगे और जो न लेगी तो मुझे बड़ा कलेश होगा। एक की दयानुता और दानशीलता देख कर बुढ़िया चकित सी रह गई और भावों में आँसू भर कर बोली 'महाराज' अधिक क्या कह आप सरीखे सत्पुरुष बहुत कम देखने में आये हैं।



पाठ २—अपनी संतान पर माता का स्नेह

ईंग्लैंड देश की राजधानी लन्दन नगर में दाइड नामो एक स्थान है। वहाँ बहुत से घर आपस में मिल जुले एक पोलि में बने हुए हैं। वह किसी के निज का निवासस्थान नहीं है जो लोग भाड़ा देते हैं वही उनमें रहा करते हैं। अकस्मात् वहाँ

एक दिन आग लगी। उस समय एवा बड़े वेग से चल रही थी, इस कारण आग की लपट ऐसी बढ़ी कि कितने ही लोग घर से बाहर न निकल सके। अड़ोस पड़ोस वालों ने बड़े कष्ट और कठिनाइयों से कितनों को बाहर निकाला, तो भी बहुतरे भीतर ही रह गये। एक निर्धन स्त्री के कई एक लड़के थे। जब वह पड़ोसियों की सहायता से अपने बच्चों को लेकर घर से बाहर हुई तो यह सोच कर कि आज ईश्वर ने मुझे और मेरी संतान को बचाया, पड़ोसियों की यड़ाई और उनका धन्यवाद करने लगी और अपने प्रत्येक लड़के का नाम ले ले कर प्यार करने लगी। अंत में जब उसने देखा कि सबसे छोटा लड़का नहीं आया, घर के भीतर ही रह गया, वह उसके मोह में घबड़ा कर पागल सी हो गई, यहाँ तक कि प्राण-विनाश की शंका छोड़ जलते घर में घुस गई, परन्तु घबड़ाहट में यह न जान पड़ा कि यह किसका घर है।

थोड़ी देर पीछे एक लड़का लेकर बाहर निकल आई और संतान की प्राण-रक्षा समझ कर आनंद में डूब गई। जिस प्रकार घर के भीतर गई और वहाँ से लड़के को लाई, यह सब बात पास के लोगों से कहने लगी। इसके पीछे जब उसने उठा कर लड़के का मुँह चूमा तो जान पड़ा कि वह लड़का किसी दूसरी स्त्री का है जो उसी के घर के पास रहती थी और आग के भय से लड़के को घर में छोड़ कर भाग निकली थी।

जब वह फिर अपने लड़के को लाने के लिए घर के भीतर चली, आग की लपट इतनी बढ़ गई थी कि चारों ओर धुआँ के फैल जाने से अंधेरा हो गया। कुछ देख न पड़ता था, इस कारण वह घबरा कर फिर दूसरे के घर में घुस गई। जब उसे जान पड़ा कि यह भी दूसरे का घर है तब तो शोक से

के सारे मनुष्य व्याकुल हो गये और बंदूक लेकर मगर को मारने के लिए निशाना लगाने लगे; परन्तु यह किसी से न घन पड़ा कि उसकी सहायता के लिए जहाज़ से नीचे बतरे।

जहाज़ से कितनी ही गोलियाँ लोगों ने चलाई; पर उनमें से मगर को एक भी न लगी। मगर, बेंकनर को निगलने ही को था कि उसका बेटा, जो बड़ा पिटुमक था, यह देख कर कि अब पिता का प्राण किसी प्रकार नहीं बचता, एक नंगी तलवार ले कर समुद्र में कूद पड़ा और वेग से मगर के पास पहुँच कर उसने उसके पेट में तलवार घुसेड़ दी। तब तो मगर खिसिया कर उसी के पकड़ने को दौड़ा, परन्तु वह बड़ा चतुर पैरनेवाला था, पकड़ाई न दिया।

जब इतना अवकाश मिला तब जहाज़वालों ने रस्तियाँ डाल दीं और पिता पुत्र दोनों ने एक २ रस्ती को पकड़ लिया, तब उन्होंने ऊपर से खोंचा और इन दोनों के शरीर जल से कुछ ऊपर को उठे। उस समय उनकी प्राण-रक्षा होते देख सब को परम आनंद हुआ, परन्तु वह कराल जन्तु मुँह फाड़ कर ऊपर को उछला और बेंकनर के ब्र का नामों तक शरीर निगल गया और भटपट पैंने दाँतों से कमर तक निगले हुए शरीर को काट कर जल में गिर पड़ा; लड़के के शरीर का कटा हुआ ऊपर का भाग रस्ती के संग भूलने लगा।

यह देख कर सारे मनुष्य शोक में विकल होकर हाहाकार करने लगे और बेंकनर जहाज़ पर से पुत्र की ऐसी दशा देख कर शोक से मूर्छित हो गया। उस समय पास वाले जो उसे पकड़ न रखते तो वह अवश्य समुद्र में कूद पड़ता और प्राण तज देता। उसका पुत्र जब तक जीता रहा, टफटकी लगाकर पिता की ओर देख देख आनंद से यह अनुमान करने लगा

हैं। बीमारियों से बचाव होता है और शरीर की आरोग्यता में दिन दिन उन्नति होती जाती है। सँकड़ों बीबा धरती जो पहिले बंजर पड़ी थी, अब उसमें खेती जारी होने लगी है। हिन्दुस्तान की मनुष्य-संख्या अब इतनी बढ़ती जाती है कि जङ्गल न काटे जाय और नई धरती खेती के योग्य न बनाई जाय तो संपूर्ण निवासियों को भोजन मिलना कठिन हो जाय। ठौर ठौर नदियों से नहरें निकाली गई हैं, जिनसे खेती को बहुत कुछ लाभ पहुँचता है। डाक, तार, रेल, अँगरेज़ों ही ने चलाये हैं जिनके लाभ प्रकट हैं। जिन समाचारों के पहुँचाने में अधिक व्यय होता और बहुत समय लगता था और जिनमें प्राणों की बाधा भी थी अब घंटों में बहुत ही सुगमता से थोड़े व्यय में सहस्रों कोस निस्संदेह पहुँच सकते हैं। जिन स्थानों को पहिले कोई स्वप्न में भी नहीं देख सकता था, अब वहाँ रेल द्वारा पेखटके थोड़े समय में पहुँच सकते हैं। व्यापार की भी रेल और तार से इतनी उन्नति हुई है जो कहने में नहीं आती। ढाँगी, बालहत्या, दुखितकुशी और सत्ता हाँसे की रीति जिनके स्मरणमात्र से रगटे खड़े हैं आज हैं मर्कट अँगरेज़ी के उद्योग से बंद हाँगाई हर मानव सहस्रों बच्चे शान्तता के भेट हाँसे थे अब टीका के प्रचलित हाँसे से मृत्यु के ग्राम हाँसे में बच जाते हैं।

सबसे बड़ा लाभ शिक्षा के हिन्दुस्तानियों को इस राज्य में पहुँचा है। हिन्दुस्तानी जो मूलतः के अधःकार में पड़े थे अब विचारपूर्ण मनुष्य के प्रकार में उनके हृदय का अधिकार दूर हो गया। सरकार ने जो जो उपाय उनको उन्नति के निर क्रिये हैं और जो जो लाभ उनमें पहुँचे हैं और पहुँच रहे हैं उन उपकारों से उन्नत होना असंभव है

पाठ ५—ग्रहचक्र

बहुत से तारे जो रात में हमको दिखाई देते हैं स्थिर हैं, अर्थात् अपना स्थान नहीं बदलने, परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो नियत स्थान पर नहीं रहते। जो अपना स्थान बदला करते हैं, ग्रह कहलाते हैं। ग्रह सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं। ग्रहमार्ग वृत्ताकार नहीं है, कमकी आकृति अंडाकार है।

सुघ्र जिसको अँगरेज़ी में मर्करी कहते हैं सबसे छोटा है। पृथिवी इससे सत्रह गुणा बड़ी है। तीन महीने में सूर्य के चारों ओर एक बार घूम आता है। यह सूर्य के बहुत पास है। सूर्य से इसका अंतर साढ़े तीन करोड़ मील है।

इसके अनन्तर शुक्र है जिसको अँगरेज़ी में वीनस कहते हैं। यह डील डाल में पृथिवी के बराबर है और इसकी परिक्रमा में साढ़े सात महीने लगते हैं। सूर्य से इसका अंतर छः करोड़ सत्तर लाख मील है। मर्करी को यह परिधम में और सूर्य पूर्व में दिखाई देता है। जैसे शुक्र हमको देख पड़ता है वैसे ही शुक्र वालों का हमारी प्राथम्य समकन हुए तारे के समान ज्ञान पड़ती है।

शुक्र के पीछे पृथिवी है। इसकी प्रदक्षिणा का समय एक साल है। यह सूर्य से ना बराबर तीन लाख साल दूर है। चन्द्रमा इसका साँगा और एक महीने में घूम आता है। इसलिये इसका उदयग्रह कहलाता है।

पृथिवी के अनन्तर मंगल है जिसको अँगरेज़ी में मार्स कहते हैं। मंगल से प्राथम्य आठ गुना बड़ी है। इसकी प्रदक्षिणा में दस वर्ष लगते हैं। यह सूर्य से बाराह करोड़ मील दूर है। इसका उदयग्रह है। दूसरी ओर हमने यह देखा है कि

भाग लाल, कुछ हरे और कुछ सफेद दिखाई देते हैं। ज्योतिषी ऐसा अनुमान करते हैं कि जो भाग लाल है वह स्थल है, जो हरा है वह जल है और जो सफेद है वह धर्म है।

मङ्गल के अनन्तर बहुत से छोटे छोटे ग्रह हैं जिनमें से मुख्य वेस्टा, जूनो, सिरीज और पलास हैं। ऐसे दो सौ से अधिक गोले देखे गये हैं और हर साल उनकी संख्या बढ़ती ही जाती है।

इन छोटे छोटे गोलों के पीछे एक सबसे बड़ा गोला है जिसको हम वृहस्पति और अंगरेज़ ज़ुपिटर कहते हैं। यह हमारी पृथिवी से तेरह सौ गुना बड़ा है। यदि शेष ग्रह मिला कर रखे जायें तो भी इसके बराबर नहीं हो सकते। यह बारह वर्ष में सूर्य के चारों ओर एक बार घूम आता है। सूर्य से इसका अन्तर अड़तालीस करोड़ साठ लाख मील है। इसके चार उपग्रह हैं।

वृहस्पति के पीछे शनिश्चर है। इसको अंगरेज़ों में सैटर्न कहते हैं। यह पृथिवी से साठ सौ गुना बड़ा है और सूर्य की प्रदक्षिणा में तीस वर्ष लगता है। इसी से इसको संस्कृत में शनिश्चर अर्थात् धीरे धीरे चलने वाला कहते हैं। इसके आठ उपग्रह हैं।

शनिश्चर के पीछे यूरेनस और नेपच्यून दो ग्रह और देखे गये हैं। यूरेनस पहिले पहिल सन् १७८१ ई० में देखा गया। यह हमारी पृथिवी से चौहत्तर गुना बड़ा है। और इसकी परिक्रमा में चौगुनी घरस लगते हैं। इसकी दूरी सूर्य से एक अरब पचहत्तर करोड़ मील है। इसके चार उपग्रह हैं।

नेपथ्यून सन् १८५६ ई० में देखा गया। यह यूरनस से भी बड़ा है। इसकी प्रक्षिप्ति १६४ बरस में पूरी होती है। सूर्य से नेपथ्यून का अंतर पृथिवी की अपेक्षा तीस गुणा है। इसके एक ही उपग्रह है।

हम देश वाले चन्द्रमा को भी एक ग्रह मानते हैं, पर अब यह सिद्ध हो गया है कि चन्द्रमा सूर्य की परिक्रमा नहीं करता है, केवल पृथिवी के साथे घोर घूमता है। इसी से हमको उपग्रह मानते हैं। हिन्दू को ग्रह सौर भी मानते हैं जिनको राहु सौर केतु कहते हैं। यह किसी विशेष गोले के नाम नहीं हैं, जब कुछ एक दूसरे को काटते हैं उनका ही स्थानों पर संज्ञान होता है। जब तुमको यदि न हुआ कि पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती है और चन्द्रमा पृथिवी के साथ घोर घूमता है, तब दोनों कुछ एक दूसरे को ही स्थानों पर काटेंगे। एही स्थानों के नाम राहु और केतु हैं

पाठ :- कथा।

यों तो इत्येक न जाने के लिए जाना ही बताया है पर मनुष्य ने अपनी अनुमाद से उस समय बताया निकाल है जिनमें शरीर में दुर्गता लाने भोजन वर कर्म आदि के भी अनेक गुण हैं। इसी वद्वारा ही कथा भी है। पहल कथा का शीघ्र लगाने में जब यह तब आनन्द तब उनका उद्देश्य ही आठ आठ कूट का दूरी पर एक एक पाल में लया देन है। इसका पाथा पन्द्रह कूट में बीस कूट बट सकना है परन्तु पक्ष कूट से अधिक, तथा घटन पाला। बाह्य सकल में उभय बट जाती है और लगाने वाले सुगमना में कल बाह्य सकल है। उसकी

डालियाँ लम्बों और पतली होती हैं और तने (पेड़ी) से जोड़ी जोड़ी आमने सामने निकलती हैं और हरे पत्तों से सदा ढकी रहती हैं। पत्तों के निकास के स्थान से सफेद फूल निकलते हैं और इनके मुरझा जाने पर दो या तीन दिन में फल निकल आते हैं। पहाड़ों के ढालू स्थानों पर, जहाँ कि हवा धोमी चलती है, धरती पथरीली और सूखी होती है और पानी नहीं ठहरता, यह पौधा बनपता है। उपजाऊ धरती में इसमें बड़े और बहुत फल लगते हैं। नीची चारस जगहों में बड़े पेड़ों की छाँह में इसको लगाते हैं जिसमें सूर्य की जलती हुई किरणों से फल झुलस न जायँ। कहवा का पौधा दो बरस से पहिले नहीं फलता, दो बरस में पूरा फलने लगता है, और फिर बीस बरस तक निरन्तर फल देता रहता है। रात भर में फूल खिल जाते हैं और जब सवेरे पेड़ लगाने वाला उठता है तो देखता है मानों पेड़ों पर बर्फ जम गई है। फूल बहुत जल्द मुरझा कर गिर पड़ते हैं। ऐसा बहुत कम होता है कि फूल दो दिन से अधिक पेड़ में लगे रहें। अब फल फलने लगता है और ज्यों ज्यों पकने पर आता है उसकी लाली बढ़ती जाती है।

उसके भीतर दो अंडे के आकार के दाने या बीज मटर के बराबर पीले रङ्ग के चिपचिपे गूदे में छिपे रहते हैं। बीज बाहर की ओर से गोल होते हैं, परन्तु जिधर से आपस में मिले रहते हैं चपटे होते हैं और उनके बीच में एक गहरी धारी सी बनी रहती है। बीजों के ऊपर एक प्रकार की झिल्ली होती है। कहवा की तीन फसलें होती हैं, उनमें सबसे मुख्य वह है जिसकी लुनाई मई के महीने में होती है। पक जाने पर यदि फल न तोड़ लिये जायँ तो तुरन्त गिर पड़ते हैं।

अब मैं फल तोड़ने वाले पेड़ों के नीचे धरती पर कण्डा

सामों से कोई हानि है। खान, दान, ईश्वर की वंदना हम लोगों का परम धर्म है। जिस समय और जिस बहाने से किये जायें इनसे कभी हानि नहीं हो सकती। पर लोगों के निश्चय और विश्वास की बात और है और शास्त्र की बात और है। मूर्खों की बात हम नहीं कहते; पर जिसने संस्कृत की खगोल विद्या पढ़ी है वह जानता है कि चन्द्रग्रहण पृथिवी की छाया में चंद्रमा के प्रवेश करने और सूर्यग्रहण पृथिवी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने से लगता है। यह बात अंगरेजी अथवा इंग्लिश मत की नहीं है। अंगरेजों ने तो पीछे जाना, हमारे देश के विद्वान इसको बहुत पहले से जानते हैं, और पृथिवी, सूर्य, और चन्द्रमा की छाल के नियमों के विचार से ग्रहण लगने का समय ठीक ठीक बता देते हैं। अबस्मात् या ईर्ष्या गति होती तो इसका गणित कैसे हो सकता ?

हमारे देश के प्रचलित ज्योतिषशास्त्र और अंगरेजों खगोल-विद्या के मतों में पृथिवी, सूर्य और चन्द्रमा की गति में केवल इतना भेद है कि हिन्दू पृथिवी को स्थिर मानते हैं, और अंगरेजों के मत में सूर्य स्थिर है। चन्द्रमा दोनों मतों में पृथिवी के चारों ओर घूमता है। सूर्य स्वतःप्रकाश है जिसका अर्थ यह है कि दीपक की भाँति आपसे आप घूमकता है। चन्द्रमा की ज्योति सूर्य की ज्योति है। जो भाग सूर्य के सामने रहता है उसमें बजाता देखा पड़ता है और उस भाग का जो अंश हमारे सामने होता है, हमें घूमकता दिखाई पड़ता है। पृथिवी में प्रकाश नहीं है। जैसे दीपक के आगे कोई वस्तु रखी जाय तो पीछे परछाई बन जाती है, ऐसे ही पृथिवी की भी छाया है। जब चन्द्रमा पृथिवी की परछाई करता हुआ इस छाया में पड़ जाता है तभी ग्रहण लगता है। तब यह पूछ सकते हो

कि चन्द्रमा तो हर महीने पृथिवी के चारों ओर घूमता है फिर हर महीने प्रदूषण क्यों नहीं लगता। इसका कारण समझना कुछ कठिन है। इस समय तुमको इतना ही बताया जाता है कि कभी चन्द्रमा छाया के ऊपर और कभी नीचे से निकल जाता है। ऐसा ही ग्रह सूर्यप्रदूषण के विषय में भी हो सकता है क्योंकि हर अमावस को चन्द्रमा और सूर्य एकट्ठा होते हैं। इसका भी उत्तर यही है कि रात में हमारे और सूर्य के बीच में चन्द्रमा हर महीने नहीं आता, कभी ऊपर और कभी नीचे रहता है।

पाठ ८—ब्राह्म-स्नेह

सन् १४८४ ई० में पुर्नगाल देश के लिसियन नगर से कई जहाज गोव्रा को आ गये थे। उनमें से एक में सब मिला कर लगभग सारह सौ मनुष्य थे। जहाज अफ्रीका तक निर्धियत पहुँचा। यहाँ से थोड़ी दूर पर समुद्र के नीचे एक चट्टान थी जहाँ मछलियों की अन्धाधुंधली से जहाज डरकर गया। वहाँ में पड़ा भारी छिद्र हो जाने से पाना बड़े वेग से भीतर आने लगा और जहाज के बचने की आशा न रही।

कप्तान ने जहाज का बचना असम्भव देख कर हाँगा समुद्र में डाला और बड़े से भीजन के पड़ावे लेकर उद्धार मनुष्यों के साथ उसमें सवार हो लिया। और भी बहने वाले मनुष्यों ने उसपर उतरना चाहा, परन्तु उन बीसों मनुष्यों ने उनको नगी नलधारों के बल से रोका, क्योंकि अधिक बोझ के कारण हाँगी के डूब जाने का डर था। कप्तान और उसके सगी हाँगी पर बैठ कर घड़ी से बल दिये और शीघ्र जहाज के साथ समुद्र में डूब गये।

जहाज़ पर से डोंगी पर उतरते समय फमान कंयात लेना भूल गया, इत्तलिय दिशा का दोष न हो नका और दिना समझे घूमे नाच लेकर चलना पड़ा। ये घबराहट में नींटा पानी भी जहाज़ से उतारना भूल गये और प्यास के मारे नहलने लगे, तो भी डोंगी खेने ही चले गये।

कमान पहले से बीमार होने के कारण चार ही पाँच दिन में मर गया और उसके मर जाने से दही हलचल मच गई। मयही अपने को मुखिया बनाने और अपनी आज्ञानुसार औरों को चलाने की चेष्टा करने लगे। पर हमारे की आज्ञा पर चलना किसी को नहीं आता था। अंत में सपने पकड़ करके अपने में से एक जानकार वृद्ध को अपना कमान पताया और उसी की आज्ञानुसार चलना अंगीकार किया।

[illegible]

‘जन धार मन्त्रालय’ के नाम से ‘उद्देश्य’ निकली। उनमें से
 तीन नए ही विभागों के हैं। उनमें से एक विभाग का नाम है ‘जन

करने दो ।” जेठे भाई की यह सब बातें सुन कर छोटे भाई ने कहा “आप अपने मन में यह निश्चय जान लीजिए कि मैं अपनी आंखों के सामने आपको प्राण न त्याग करने दूंगा ।” ऐसा कह घुटने टेक, जेठे भाई के चरण पकड़ फूट-फूट कर रोने लगा । तब जेठे भाई ने कहा “भैया ! अब तुम मुझे छोड़ दो, घर को जाओ । मेरे घर्छों, बहिनों और स्त्री का पालन-पोषण करो । भैया ! हठ मत करो । मेरा कहा मानो । मुझे प्राण त्याग करने दो ।”

इस तरह पर जेठे भाई ने अपने छोटे भाई को बहुत भाँति समझाया पर, उसने अपना हठ न छोड़ा : निदान छोटे भाई का हठ उसे मानना ही पड़ा । इसके पीछे छोटा भाई समुद्र में फेंक दिया गया । वह पैरना अच्छा जानता था । इस कारण नुरन्त नहीं डूब गया । किन्तु कुछ काल तक पैरता रहा । पीछे मृत्यु के भय से नाव के पास आ दहिने हाथ से उसका पत, बाग पकड़ कर पैरने लगा । पर एक कंबट ने तलवार से उसका हाथ काट डाला । तब फिर समुद्र में गिर कर पैरने लगा और कुछ देर पीछे आकर बाये हाथ से नाव का पतवार पकड़ा तब फिर मज्जाहों ने तलवार से दूसरा हाथ भी काट डाला । तब पर भी वह अपनी दोनों बांहों को ऊपर उठाये बाँध के चल नाव के पास-पास पैरना चला ।

उसकी यह दशा देख सबका जी भर आया और सबों की आंखों से आसु निकल पड़े । सबों ने एक होकर यह कहा कि जो भाग्य में पड़ा है सो नो किस्मी का डाला टलने का नहीं उचित है कि ऐसे भ्रातृस्नेही का प्राण बचावे क्योंकि किस्मी ने आज तक ऐसा भ्रातृस्नेही न देखा होगा ! ऐसा कह कर उन्होंने झटपट उसे डोंगी पर चढ़ा लिया ।

घोड़ी दूर जाकर क्या देखते हैं कि एक मनुष्य पेड़ के ऊपर जिस डाल पर बैठा है उसी को काट रहा है। उसको महामूर्ख समझ कर बड़े आदर से नीचे बुलाया और कहा कि बलो, हम तुम्हारा विवाह राजा की लड़की के साथ करा दें परन्तु यहाँ तुम मुँह से न बोलना। जो कुछ बातचीत करनी हो संकेत-द्वारा करना। इस भाँति समझा-बुझा कर वे उसको सभा में ले गये। पंडितों ने उसका बड़ा आदर किया और ऊँचे आसन पर बैठा कर राजकुमारी से निवेदन किया कि ये बृहस्पति के समान हमारे गुरु आपके साथ विवाह करने आये हैं परन्तु आजकल ये मौन व्रत धारण किये हैं। जो कुछ शास्त्रार्थ करना हो संकेत-द्वारा कीजिए। राजकुमारी ने इस अर्थ से ईश्वर एक है एक अंगुली उठाई। मूर्ख ने यह समझा कि राजकुमारी एक अंगुली दिखा कर मंगी आख फाड़ने को कहती है उसने इस विचार से कि मैं तेरी शानों आखें फाड़ दूँगा, अपनी दो अंगुलियाँ दिखलाई। परन्तु पंडितों ने उन दो अंगुलियों से ऐसे ऐसे अर्थ निकाले कि राजकुमारी को हार मान लेनी पड़ी। शानों का विवाह हो गया। रात को जब दोनों राजभवन में सो रहे थे, एक ऊँट चिल्ला उठा। राजकुमारी ने पूछा यह क्या बल्ला है मूर्ख जो किसी शब्द का भी शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता था बोल उठा कि 'ऊट' चिल्लाता है। राजकुमारी ने फिर पूछा तब भी उस मूर्ख के मुँह से 'ऊट' शब्द साफ़-साफ़ न निकला बार बार उट, उट, बकता रहा तब तो पंडितों का हँस राजकुमारी पर खुल गया और वह फूट-फूट कर रोने लगी फिर क्रोध में आकर उसने मूर्ख का घर से बाहर निकलवा दिया।

मूर्ख भी अपने मन में बड़ा दर्ज़िन हुआ। पहिले तो

हुई । भेड़िये गाड़ी के पीछे लगे ही रहे । अंत में सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि आपने मेरे साथ बहुत उपकार किये हैं और मैं उनसे उन्मूल होना चाहता हूँ । मेरी स्त्री और बच्चों की सुधि लेना । इतना कह ज्योंही सेवक ने कूदने का मन किया, स्वामी ने उसका हाथ पकड़ लिया पर वह कूद ही पड़ा, और भेड़िये उसको खा गये । इस प्रकार दो बचे हुए घोड़ों को अपने पड़ाव तक पहुँच जाने का समय मिल गया । दूसरे दिन तड़के स्वामी उस स्थान पर आया जहाँ उसके प्रभुभक्त सेवक ने उसके ऊपर अपने प्राण निद्धावर किये थे । उसने वह तमंचा पाया और देखा कि चर्फी रक्त से लाल हो रही है । उस अमीर ने अपने सेवक की भक्ति के स्मरण हेतु वहाँ पर एक स्तम्भ बनवा दिया ।

पाठ ११—स्वामिभक्ति (२)

राजपूत सदा अपने देश की स्वतन्त्रता पर प्राण निद्धावर करने पर उद्यत रहते और अपनी जाति के नाम पर सिंह की तरह लड़ते और मरते थे । इनकी वीरता की सैंकड़ों कहावतें प्रसिद्ध हैं । पुरुषों का क्या कहना, इनकी स्त्रियों से भी वह काम बन पड़े हैं जो अब तक उनकी वीरता और प्रभुभक्ति की सुधि दिलाते हैं । राजस्थान में राणा सांगा बहुत दिनों तक मुसलमानों से लड़ता-भिड़ता रहा । अपना राज्य स्थिर रखने के लिए वह बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ा और इस वीरता से तलवार चलाई कि अभी तक उसका नाम चला आता है । इसके पीछे उसका लड़का बिक्रमाजीत उसकी गद्दी पर बैठा, परन्तु बाप-बेटों में बड़ा ही अंतर था । अंत में सब प्रधान पुरुष और मन्त्री उसकी अयोग्यता से घबड़ा कर चिगड़ बैठे और वन-वीरसिंह को रातगद्दी पर बैठाया । वह राज पाते ही निहुरता

उसके प्यारे बालक को मार डाला। मा उसकी और देखती रही, पर चूँ न की, और न आँख से आँसू गिराया कि जिससे भेद खुल जाय। स्वामी के हित के लिए धाय ने अपने घबे को बलिदान दिया और कुँवर के प्राण बचाये। धन्य हैं वे मनुष्य जो अपने स्वामी के लिए अपने प्राण तक निष्ठावर कर देते हैं।

पाठ १२—उदारता—यैरी को कैसे मारे (घस में करे)

एक दिन एक मनुष्य जाड़े की ऋतु में अपने बच्चों के साथ पैठा आग ताप रहा था और मनोहर कहानियाँ हो रही थीं। इतने में बाप ने अपने छोटे बच्चों से पूछा कि यैरी को मारने की अति उत्तम रीति कौनसी है? एक ने कहा अवश्य उसको गोली से मार दे; दूसरे ने कहा नहीं उसको कटार से मारे; तीसरे ने कहा नहीं भूखों मारे।

उनके बाप ने कहा मैं तुमको इससे अच्छी रीति बता सकूँगा। बिना एक बूँद लोहू बहाये और बिना जीव लिये शत्रु मारा जा सकता है। अब मैं तुमको एक घाता मुनाता हूँ जिससे तुम जान लोगे कि यह कैसे हो सकता है। किसी समय मैं एक किसान था जो बहुत ही अग्रिय, कुशल और चिड़चिड़ा था। कुछ भी उसके विपरीत होता वह उसको बहुत कुछ मान लेता और अपराधी को बहुत बड़ा दण्ड देता। उसके पड़ोस में कोई ऐसा लड़का न था जो उसे द्वार पर जाते देख कर दुखी न होता हो। यदि कोई कुत्ता जो उसकी बत्खों को देख कर भौंकता, या कौआ जो उसके पड़ोसी की दीवार पर चोलता, तो वह तुरन्त उसके चाबुक या गोली से मारा जाता।

कि मुझे अपने ही काम से अवकाश नहीं है, मैं सहायता न करूँगा। ग्रीन एक मनुष्य से जो उसके पास खड़ा था, बोला कुछ चिन्ता नहीं है, मैं वस्त्रों को शीघ्र ही मार डालूँगा और तुम देखते रहना कि मैं मारता हूँ या नहीं।

थोड़े दिन पीछे इस दुष्ट किसान के बैल की जोड़ी की वही दशा हुई जो उसके पड़ोसी के बैलों की हुई थी। ग्रीन यह देख कर अपने बैल और रस्सी लेने का भण्डा और दल-दल की और चला; उसने सहायता करना ही नहीं चाहा वरन् सहायता देने लगा; तुम सोच सकते हो कि उसका प्रतिफल उसने क्या पाया। किसान ने ग्योरी चढ़ा क्रोधित होकर कहा मैं तुमसे सहायता नहीं चाहता, अपने बैल ले जाओ। ग्रीन ने कहा मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करूँगा, क्योंकि रात होने आई और जो संकट दिन में होता है अँधेरे में और भी अधिक हो जाता है। बैलों और आदमियों ने बल किया और सब काम बन गया। उस रात को उसके चित्त पर इसका इतना प्रभाव हुआ कि उसने कहा कि ग्रीन ने मुझे मार डाला है। यह ज्ञान कर उसकी ग़ा आश्चर्य की दृष्टि से उसकी आँखें देखने लगीं। निस्सन्देह शत्रु मारा गया और न तो उसकी जान गई और न एक वृद्ध लोह रहा। दूसरे दिन वह अपने दयानु पड़ोसी के पास गया अपनी कुतर्कना की स्वीकार करके जमा माँगी और अब वही मनुष्य जो दुष्कर्मों के कारण विख्यात था सबका प्याग हो गया।

इस संसार में बल से जीतने और दया से जीतने में बड़ा अंतर है। बल से जीतना ऐसा है जैसा बहने पानी की धारा में बांध बांधना। थोड़े काल तक पानी के बहाव को बांध रोक सकता है परन्तु जब दृढ़ता है पानी की धार पहिले की अपने

अंघों को स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा छपाई हुई पुस्तकों को पढ़ाने के लिए एक विद्वान् ने अपूर्व युक्ति निकाल कर किनना पड़ा उपकार किया है। वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर साँचे में ढाल कर बनाया जाता है, उसका ऊपरी भाग कुछ उभरा हुआ रहता है और अँगुलियों से छूने ही अंघों को अक्षरों के रूप का ज्ञान हो जाता है। लकड़ी का एक पट्टी होती है और उसमें कोठे कटे होते हैं। पट्टी के प्रत्येक कोठे में वर्णमाला के एक-एक प्रकार के अक्षर भरे रहने हैं। स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा अंधे उन अक्षरों को पहिचानना सीखने हैं। अब वे अक्षरों को भली भाँति पहिचानने लगते हैं तब उनको अक्षर मिला कर शब्द बनाना सिखाया जाता है और अब वे इसमें पकड़े हो जाते हैं तब उन्हें शब्दों के ज़ाउ कर वाक्य बनाना सिखाते हैं। अंधों के पढ़ने की पुस्तकें मोटे और पोंटे कागज़ों पर छपाई जाती हैं। वह वे उन कागज़ों को पानी में भिगा देने हैं जिसमें अक्षरों के ऊपर भली भाँति उभरा आवे। अंधे दले हुए अक्षरों को पढ़ने में पहिचानने ही के इसमें उन उभरे अक्षरों पर अँगुली फेर कर तब हुआ बेरकाबट पढ़ सकने है। इस रीति से अंधे कर्मों भय नष्ट कर अन्य भय-शय का भगवन् से भाख सकने हैं।

विद्वानों ने अंधों के लिखने सिखाने का नये नये विधानों हैं। अंधों के लिखने का कारण एक बड़े बड़े में लगा कर रखना जाता है जिसमें सरक न सके। कुछ दिन घोंम पढ़ने अंधे अपना लिखा तब शब्द सकने थे परन्तु उन्हें में में एक ने ऐसा युक्ति निकाली कि लिखने समय अक्षरों के नाचे एक रेशमी कपड़े का टुकड़ा रख लिया जाय। उसने वे अक्षर कागज़ पर लिखे जाय उनका आकार उन्म कपड़े पर उभर

माने, फिर उस पर सैंगुनी काँट कर ये सड़त में लिखा हुआ पढ़ सकें ।

देगे ही मृगोळ मिळ्याने केे लिंग मोटे कागज पर ऐसे नज्जे नमाये जाते हैं कि उन में अलग-अलग देगों के मीमांसे। पर नार लगे रहते हैं और इन्ही प्रकार नगर, गाँव, पहाड़, नदी, जीव इत्यादि के अलग अलग सिद्ध निगम कर लिये हैं।

[illegible]

लगता होगा। परन्तु जिन लोगों ने गूँगों को यातचीत करते देखा है वे ही उनकी शीघ्रता को जानते हैं। गूँगे अपने मन के भावों को बिना भूल-चूक के संकेत में प्रकट कर सकते हैं। पहिले तो ऐसी सांकेतिक भाषा के बोलनेवाले रुक-रुक कर बोलते हैं, पर अभ्यास हो जाने पर बड़ी शीघ्रता से यातचीत करने लगते हैं।

आयरलैंड के डबलिन नगर में एक पाठशाला है जिसमें सवा सौ गूँगों के लगभग शिक्षा पाते हैं। इनको वहाँ लिखना-पढ़ना और नक्शा खींचना इत्यादि उपयोगी बातें सिखाई जाती हैं। कलकत्ते में भी एक ऐसा ही विद्यालय गूँगे और बहिरों के लिए खोला गया है।

पाठ १४—शीतला और उससे बचने के उपाय

जो रोग बच्चों को होने है उनमें शीतला बहुत प्रचल है। कुछ मनुष्यों का यह मत है कि ना महीने गर्भ में रहने से जो माँ के रुधिर और मल की गर्मी बालक में समा जाती है वह उत्पन्न होने के पछे किसी न किसी समय बिग हो कर फूट निकलती है। इस कारण शीतला सब मनुष्यों का अवश्य ही निकलती है। किसी किसी का यह मत है कि शीतला एक रोग है जो और रोगों की भाँति आप ही उत्पन्न होती है। सब जानते हैं कि शीतला का कोई औषधि नही है केवल उसके निवारण का एक उपाय है कि जिसके द्वारा यह प्रचल रोग शान्त हो सकता है और जिससे फिर उसका निकलना अथवा दुख-दाई रूप से उभड़ना कठिन हो जाता है। मनुष्यों ने रोगों की चिकित्सा के लिए अनेक अनेक अद्भुत उपाय निकाले हैं। इन सबसे विचित्र साधन यह है जो शीतला की शान्ति के

भरा चेप निकलता है यही काम दे जाय; यह सोच कर उन्होंने शीघ्र ही उसका प्रयोग किया और उसका परिणाम बहुत ही संतोषदायक हुआ। पार्लियामेंट ने उस परिश्रम के पुरस्कार में सन् १८०२ ई० में एक लाख रुपया दिया और सन् १८०७ ई० में उनकी सहायता में दो लाख रुपया और देने की सम्मति प्रकाश की। तबसे चेक्सिनेशन अर्थात् टीका लगाने की खाल प्रचलित हो गई। टीका लगाने की क्रिया कुछ कठिन नहीं है। किसी हुए-पुए बालक के टीका लगाने के अनन्तर आठवें दिन फफोलों से चेप निकाल कर अथवा अस्पताल से उसको मंगा कर उपदेश के अनुसार लगाने से शीतला का निवारण हो सकता है। यदि टीका लगानेवाला कुशल हो और शुद्ध चेप का प्रयोग किया जाय तो हानि की किसी प्रकार संभावना नहीं हो सकती। जो कभी टीका लगाने के पीछे उसका कुछ प्रभाव न जान पड़े तो अवश्य समझ लेना चाहिए कि उसके प्रयोग में कुछ दोष रह गया। ऐसे अवसर पर फिर दूसरी बार टीका लगवा देना उचित है, और जो शीतला निकल भी आई हो तो निकलने के पाँचवें दिन तक टीका लगवा देने से कुछ हानि नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से अवश्य ही इसकी प्रचलता घट जायगी। टीका लगाने का सबसे अच्छा समय जाड़े की श्रु है। जितनी जल्द हो सके टीका लगवा देना चाहिए। जिस लड़के को कोई रोग न हो तो जन्म से पंद्रह दिन के पीछे और तीन महीने के भीतर टीका लगवा देना उचित है, पर दुर्बल और रोगी बच्चों के जब तक दाँत न निकल आये टीका न लगवाना चाहिए। मनुष्य को दो बार टीका लगवाना चाहिए, पहली बार बचपन में और दूसरी बार सत्रह परस की अवस्था में। दूसरी बार टीका लगवा

इस से जगद गुरु की शिवाजीयता के निरूपण का मत आ
रहा है ।

[illegible][illegible]

中国 2000 年 10 月 1 日起实施《中华人民共和国固体废物污染环境防治法》, 对固体废物污染防治提出了更高的要求。《固体废物污染环境防治法》规定: “国务院生态环境行政主管部门应当会同国务院有关部门制定国家危险废物名录, 规定国家危险废物名录, 并报国务院批准。对列入国家危险废物名录的固体废物, 应当按照国家危险废物名录的规定进行危险特性鉴别。对列入国家危险废物名录但尚未进行危险特性鉴别的固体废物, 未经鉴别, 不得擅自倾倒、堆放、填埋、转让、利用、处置。”

संपूर्ण प्रमाणों से सिद्ध है कि टीका लगाना मनुष्य को शीतला से घचाता है और यदि उसे रोक नहीं देता तो उसकी प्रचलता को अवश्य ही कम कर देता है। इतने पर भी भारत-निवासी मनुष्यजाति घर रोग के निवारण करने का उपाय स्वीकार न करे तो इससे अधिक क्या शोक की बात हो सकती है। जिन उपायों से सर्वत्र प्राणरक्षा की संभावना होती है और जिनके सुप्रतिष्ठित डाक्टरों ने परीक्षा करके लाभकारी ठहराया है, मनुष्य अपनी मूर्खता के कारण उनका तिरस्कार करते हैं।

पाठ १४—ज्वालामुखी

आदि में पृथिवी पिघली हुई धानुधों का एक बड़ा भारी गोला था जो धीरे धीरे ठंडा हो गया है। इसमें संदेह नहीं है कि अब भी पृथिवी के नीचे बड़े-बड़े आग के कुंड हैं। इसके बहुत से प्रमाण हैं। बहुत से देशों में गरम खानें खोदी गई हैं। उनसे यह बात विदित हुई है कि जितनी गरमाई अधिक होती जाती है उतनी ही गरमा बढ़ती जाता है और क्या अचरज है कि जो गरमों इन्हीं भात बढ़ना जाय ना कन्ट तक पेंसी गरमी है। जाय कि मिट्टी और पत्थर के गला कर भाव बना दें इस बात के और भी प्रमाण हैं। बहुत से स्थानों में पृथिवी के भीतर से खालता पानी निकलता है। ऐसा एक तम कुण्ड कंदारनाथ के पास और दूसरा बटोनाथ के पास है। आरम लड में गंभीर होते हैं जिनमें से खालता पानी धरती से नीचे फुट तक ऊंचा उठता है। पृथिवी के भीतर आग का होना भूकंप और ज्वालामुखी से और भी पुष्ट होता है।

ज्वालामुखी पहाड़ों के मुँह ऊपर की ओर खुले रहते हैं,

दुनिया भर में तीन सौ के लगभग ज्वालामुखी पहाड़ हैं। यह पटुघा समुद्र के समीप होते हैं। सबसे ऊँचा प्रज्वलित पहाड़ 'कोटोपैक्सी' है जो अमेरिका महाद्वीप के पेंडोस पहाड़ की श्रेणी में है। हिमालय के सदृश इसके शृंग गर्फ से ढके रहते हैं और जब उद्गमन होने को होता है तब गर्फ गरमी से पिघल कर पहाड़ के नीचे कोयड़े वेग से यह चलती है जिससे समीप के देशों को बहुत हानि पहुँचती है। हवाई द्वीप में "किलौवा" संसार में सबसे बड़ा ज्वालामुखी है। उसके मुँह का घेरा नौ मील है। उसमें आग के फुएड हैं जिनकी भभक तीस-चालीस फुट तक ऊँची बठती है। यूरप में पटना, विस्सुवियस और हंकला प्रसिद्ध ज्वालामुखी हैं। एशिया के दक्खिन पूरब के द्वीपों में भी कई ज्वालामुखी हैं।

पाठ १६—विजली का तार (नारयणी)

फारसी और अरबी की कविता के कहनुबा* का गुण बहुत प्रसिद्ध है। कहनुबा के नाम ही से उसके गुण प्रकट हैं। फारसी भाषा में काह का अर्थ नृण और रश का खाचनेवाला है। यूनानी ग्रन्थों से यह ज्ञाना जाता है कि इसा मसीह से ५०० बरस पहले वही विद्वान थेनीस को इस कहनुबा के गुण विदित थे और वह गुण यह है कि यदि कहनुबा को रेशमी कपड़े से रगड़े तो उसमें तिनके खाचने की शक्ति आ जाती है अर्थात् पास लाने से तिनके उड़ बढ कर उममें चिपक जाते हैं और थोड़ा देर चिपके रह कर आपसे आरगिर पड़ने हैं।

कहनुबा एक पाड़ी बन्दु गोद में होते हैं और बड़े बानारों में मिलती हैं।

है कि यह हाथ डेढ़ हाथ के काँच के पात्र से निकाली जाती है। वह कोसों लम्बे-चाड़े घादल से घनती है।

एक प्रकार की बिजली धाराप्रवाही होती है। जस्त वा ताँबे पर तेज़ाय डालने से जो रासायनिक संयोग होता है उससे वह निकलती है। एक काँच के घरतन में एक पत्र जस्त का और दूसरा ताँबे का डालो, दोनों में एक-एक तार बाँध दो और कटोरे में गंधक का तेज़ाय डाल दो। दोनों तारों को मिलाने से बिजली की धारा चलने लगेगी; तार अलग रहने से धारा बन्द हो जायगी। यदि तार लाखों मील लम्बे हों और मिले रहें तो भी धारा बन्द नहीं होती। इस धारा में अनेक गुण हैं। एक तो यह है कि धारा का तार कपड़ा लपेट कर लोहे की छड़ में लपेट दिया जाय तो वह लोहा चुम्बक हो जायगा और उसमें दूसरे लोहे को खींचने की शक्ति आ जायगी। चुम्बक की सुई जो कुतुबनुमा में रहती है उसके ऊपर धारा का तार ले जाने से सुई, जो उत्तर-दक्षिण रहती है, पूरव-पच्छिम हो जाती है। इसी गुण को देख कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजने का यंत्र बनाया गया है। सुई के तार में यहाँ से कलकत्ता समाचार भेजना हुआ तो धारा ऐसी रीति से भेजी जाती है कि कलकत्ते के यंत्र में कभी धारा सुई के ऊपर से चले और कभी नीचे से। इससे सुई कभी बायें गिरती है कभी दाहिने।

एक बार दायें और एक बार बायें के संकेत को एक अक्षर माना; दो बार दायें और एक बार बायें को दूसरा और इस रीति से वर्णमाला के सारे अक्षरों के संकेत बना लिये हैं। आज-कल इस सुई का प्रचार उठता जाता है और चुम्बक बनाने की शक्ति से विशेष काम लिया जाता है। इसमें धारा रुक-रुक

तो कर्म-इंद्रियाँ हैं, जैसे हाथ, कान, नाक, मुँह, आदि; और जिनसे सारे शरीर की पुष्टि होती है और कर्म-इंद्रियाँ अपने अपने कामों में प्रवृत्त की जाती हैं, वह अंग हैं। कर्म-इंद्रियों को रोग से बचाने का उपाय यह है कि उनसे उतना ही काम लिया जाय जितनी उनमें सामर्थ्य है, और किसी इंद्रिय में दुःख अनुभव होते ही उससे काम लेना बन्द कर दिया जाय। पर यह भी न भूलना चाहिए कि इंद्रियाँ और शरीर काम करने ही के लिए एते हैं काम न लेने से यह निष्कर्ष हो जाते हैं। स्वाध्याय काम-काज के सिवाय शरीर से परिधम के काम नियमानुसार लेने से चल पड़ता है और भोजन पचना है। इस नियमानुसार परिधम के व्यायाम कहते हैं। व्यायाम दो प्रकार का होता है - एक स्वाध्याय दूसरा विरोध। स्वाध्याय व्यायाम यह है जिसमें शरीर को चलाया जाए जैसे घाँटें का खींचना उठना बैठना लड़ना नाचना गायना मोद पझा मारना ध्यान करना इत्यादि। विरोध व्यायाम यह है जो शरीर को थकावट देता है जैसे दौड़ना स्विमिंग आदि। व्यायामों में भी बहुत सावधानी रखनी चाहिए। शरीर को थकावट न पहुँचावे। व्यायाम करते समय शरीर को ठंडा न रहने दें। व्यायाम के बाद शरीर को ठंडा न रहने दें। व्यायाम के बाद शरीर को ठंडा न रहने दें।

[illegible][illegible]

रुकावट न हो। जब हम लोग साँस लेते हैं तब स्वच्छ हवा भीतर जाती और दूषित हवा बाहर आती है। इससे जिस घर में हम सोते बैठते हैं उसे ऐसा बनाना चाहिए कि बाहर से हवा आती रहे, नहीं तो घर में धुरी हवा भर जायगी। नायदान-मोहरियों में पानी और घर के भीतर या पास फूड़ा गोबर सड़ाने से बड़ी हानि है। खतों में खाद के लिए फूड़ा इकट्ठा करने का काम हो तो ऊपर से थोड़ी-थोड़ी मिट्टी भी डालते रहना चाहिए कि जिसमें उसकी दुर्गन्ध दूर हो जाय।

घरों का भी स्वच्छ रखना आरोग्यता के लिए आवश्यक है। जो घर एक बार पसीने में भीग जाय, या तन पर लगा-तार दस-बारह घंटे रहे, उसे धो डालना उचित है, नहीं तो शरीर का मैल, जो उसमें लगा है, सब शरीर में लग जायगा।

इतना तो स्वच्छता के विषय में हुआ, अब कुछ थोड़ा सा भोजन और घर का वर्णन करते हैं।

भोजन ही से लाह, दाढ़, मांस बनता है। इससे भोजन भी ऐसा होना चाहिए कि जिसमें शरीर की आवश्यकता के अनुसार सारे पदार्थ हों और जल्दी पच जायें। एक बार बहुत सा खा लेने से दो-तीन बार थोड़ा-थोड़ा खाना अच्छा है।

घर पहिनने में केवल लज्जा ही का विचार नहीं होना चाहिए। घर ऐसा पहनना चाहिए कि जिससे अकस्मात् सरदी-गर्मी की घट-बढ़ से शरीर बचा रहे।

सरदी से सिर और छाती को बचाये रखने से उबर, खांसी आदि का डर नहीं रहता।

टुकड़े कर सकता है। लिखने का अच्छा कागज़ यदि या विधियों ही का बनता है। सन के कपड़ों के विधियों का मोटा और पुरानी रस्सियों का मटीला कागज़ बनता है। मटीला कागज़ बहुधा पुस्तकों पर बंधाने और बैठन के काम में आता है। विधियों के टुकड़े गरम पानी में धोये जाते हैं। पहले विधिड़े पानी में सड़ाये जाते थे, परन्तु ऐसा करने से कागज़ दिगड़ जाता है। पहले विधिड़ों के साफ़ करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। बहुधा मज्जी के पानी से धोकर विधिड़ों को धूप और ओस दिखाते थे इस पर भी कागज़ वैसा सफ़ेद, जैसा कि चाहिए, नहीं होता था। इस दोष को छिपाने के लिए कागज़ को हल्का नीला रंग देने में पर श्रव क्रोमिन गैस से सहज ही में कागज़ सफ़ेद हो जाता है। जब कल में विधिड़ों के टुकड़े बहुत महान हो जाते हैं तो क्रोमिन गैस से बनका था। कूट पीस कर उनकी लुब्धी बना लेन ए और इस लुब्धी का कागज़ बनाने हैं। कागज़ दो प्रकार से बनता है—हाथ से या कल से। पहले हाथ से बनाने की रीति लिखी जाती है।

कागज़ के लिए दो वस्तुओं की आवश्यकता होती है—एक साँचा, दूसरा लकड़ा का चौकड़ा। साँचा तारों से बुना हुआ चौखुंटा और खाखला होता है जितना बड़ा कागज़ बनाना हो उससे साँचा कुछ बड़ा होना चाहिए तार का घनाघट कपड़े का बुनाघट सी होता है जिसमें कि तार के बिंदु कागज़ पर न बन जावे। चौकड़ा एक बहुत पतले काट का पट्टे का बनता है और साँचे पर टोक बैठ जाता है। चौकड़े से साँचे पर विधिड़ों की लुब्धी डलाई जाता है। एक मनुष्य चौकड़े समेत साँचे को कुछ अपना और मुका कर विधिड़ों की लुब्धी से भर हुए घनन में डुबा देता है और साँचे को सा।

ने निघासी लुरं राघर्ट ने सन् १७८३ ई० में निकाली थी। इनके पीछे इंगलैंड में इस काल का प्रचार हुआ। अब नौ दिन-दिन कालों की ऐसी उन्नति होती जाती है कि नित कोर न कोर अद्भुत रीति निकाली जाती है। कागज़ भी एक से एक उत्तम, पुष्ट और चिकने बनते हैं और पृथिवी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक कागज़ का प्रचार हो गया है। जैसे अष्ट्रे कागज़ अब बनते हैं वैसे पहले स्वप्न में भी नहीं दिखाई पड़ते थे।

पाठ १६—ट्रांपरी और युधिष्ठिर का संवाद

पाँचों भाई कागड़य जुये में अपना राजपाट हार कर पन का खले गये। यह पक्ष दिन संख्या समय ट्रांपरी के साथ बैठे हुए थे लोग अन्न देख गे गे थे इतने में पातवता ट्रांपरी घबरा कर गायत्र से बोला भलागज देखिये हम लालों का वनवास दकर उम पाण उद्योधन का मन मिला न हुआ हम लोग का मृगदाला पटना कर घर से निकलवा दिया फिर भा संभर देख न हुआ मग समन मेता उत्तक। हृदय पथर र र जा उनन अन्न वह नाह आप ऐस धर्मात्मा का पन खग खग सुनाह देखिय आप मुख क योग्य य से आपका य इतना बड़ा देख दकर अपना मुख मान रहा है उया मन री शकुनि उ शासन इन लालों के आख म आस तक न गगा, और जितन कोरव समा म बैठ थे उनकी आंखा से आग बहता था जब न देखता है कि आप पहल किस आसन पर चिराजन थे और अब कहा बैठन र ना मुझका बड़ा मोच होता है। देखिये आप पहल जडाउ सितासन पर बैठा करने थे, अब यह कुशासन पर बैठ दया

जाता । महाराज ! ऐसे सुन्दर शर्याद-माद्री के पुत्र सहादेय को
 यन में दुखों देख क्यों आप दुर्योधन की सहते हैं ! मैं महा-
 राजा द्रुपद की बेटी, महाराज पांडु की बहन, धृष्टद्युम्न की पहिन
 और आप सरीखे वीरों की पतिव्रता रही हूँ : सो मुझे यन में
 इस प्रकार से दुखों देख कर आप दुर्योधन के अन्याय को कैसे
 सहते हैं ? अपने भाइयों का और मेरा दुख देख कर आपके
 चित्त को क्लेश नहीं होता । इससे जान पड़ता है कि महाराज !
 आपके शरीर में तेहरा रही नहीं गया । यह जान सिद्ध है कि
 क्षत्री जाति में कोई ऐसा न निकलेगा जिनमें तेहरा न रहे और
 आपमें उसका उभाय देख कर आपके क्षत्री होने में मुझे
 संदेह होता है । जो क्षत्री क्राय के अयसर पर मोघ नहीं
 करता सो कोई उसका अनादर करने है । इसलिये आपकी
 शत्रुओं पर जमा करना उचित नहीं है और इसमें कुछ संदेह
 नहीं है कि आपके थोड़ा हा क्राय में शत्रुओं का नाश हो
 जायगा । इसी प्रकार जो क्षत्री जम के अयसर पर जमा नहीं
 करता है वह सबका आपस होना है और अपने इस लोभ और
 परमांक को बिगाड़ता है

इतना बचन कह कर उं पडा उदास हो गई महाराज
 युधिष्ठिर उसको धारज दिलाने के लिये बोले व्यासों ' देखो
 मोघ हो मनुष्यों का नश करना है और क्राय ही में मनुष्यों
 की अयनति ना होता है । इसमें क्राय ही इन दोनों का मूल
 कारण है । देखो जो मनुष्य क्राय के जानता है उसका
 कल्याण होता है और जो क्राय के ना सोच सकता परम
 दारुण क्राय इसका नाश कर डालता है विचारो तो जय
 क्राय में प्रजा का अगण विनाश देख पड़ता है नव भला हम
 मगराव नमस्कर क्राय करने करने लगे क्राय मनुष्य नव

गया—“ऐसा न हो एक दिन तुम्हें इन बातों पर पड़ना पड़े जो तुमने ऐसे मनुष्य के विषय में कही हैं जो उदारता में तुमसे किसी भीति घट कर नहीं हैं।”

इतना कह युयुटो प्रणाम कर अपने घर आया और अपने मित्रों से विदा हो कर एक जहाज़ में, जो नेपल्स को जा रहा था, सवार हो लिया। अपना देश छोड़ते समय उसने आँख से एक आँसू तक न डाला।

नेपल्स के राज्य में उसका कुछ रुपया उधार फैला हुआ था। वहाँ से उसको लेकर वह एक टापू में जो वेनिस के राज्य के अधीन था, जा बैठा। परिधम और व्यापार में योग्यता के कारण यहाँ उसने उससे भी अधिक संपत्ति एक ही दो साल में एकत्र कर ली कि जितना जिनोआ में उसके पास थी। उदारता और कीर्ति में उसका नैरव्य उसकी संपत्ति से घट कर न था।

व्यापार के हनु जिन स्थानों में यह बढ़ा जाया करता था उनमें से एक स्थान ट्यूरिनिस था। इटली के बहुत से राज्यों से ट्यूरिनिसवाले से विराय या और विराय कर जिनोआ में। युयुटो वहाँ के एक प्रधान पुण्य से उसके घर पर मिलने गया। वहाँ उसने एक ईसाई गुलाम को जिसके पैरों में बँडियाँ पड़ी थी, देखा। यह सुकुमार युवा पुण्य पारक्रम के मारे पिटा जाता था और ऐसा जान पड़ता था कि उसने पहले कभी ऐसा कष्ट नहीं उठाया था जिस प्रकार से काम करता था कभी कभी बस पर नहाया देकर मुक्त जाता था।

युयुटो ने उसका आर करणामय टापू से देखा और इटली भाषा में उससे उसका हाल पूछा। अपना माननाया के शब्द

कर यहे प्रेम से सत्कार किया, अन्त में उसने उत्तम अयस्कर पाकर उसको जिनोश्रा भेज दिया। उसके पहुँचाने के लिए उसने एक स्वामिमल नाकर साथ किया और सुख का सामान यात्रा के लिए इकट्ठा कर दिया। एक हाथ में कुछ अशर्कियों की धौली और दूसरे में एक चिट्ठी देकर कहा—“मेरे प्यारे युवा! मैं बड़े हर्ष के साथ तुमको अपने घर अधिक काल तक टिकाता परन्तु मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम्हारा मन अपने मित्रों से मिलने का अर्धार हो रहा है। मैं सोचता हूँ कि मेरी ओर से यह बड़ा निरुत्तर काम होगा यदि मैं तुमको रोकूँ और उनकी प्रसन्नता में जो तुम्हारे फिर मिलने से होंगी, बाधक होऊँ। यात्रा की इस नामर्गी को स्वीकार करो। यह पत्र अपने पिता के हाथ में देना। कदाचिन् उसको कुछ मेरी लुभ हो। आशीर्वाद। मैं तुमका कभी न भूलूँगा और मैं आशा रखता हूँ कि तुम भी मुझका न भूलोगे।”

छोटें अडानों ने अपना कुतजता प्रकट की और प्रेम पूर्ण रूप से प्रकाश किया और दोनों के आँखों से चलते समय आँसु बहने लगे। युवा कुशल से अपने घर पहुँच गया। जब उसके माता पिता ने जो गाँवनागर में डूबे हुए थे उसका देखा तब उनके आनन्द का वाग्दान न रहा क्योंकि वह तो यह समझें हुए थे कि जिस जहाज़ में वह गया था वह समुद्र में डूब गया। जब वृद्ध अडानों ने यह जाना कि उसका बेटा स्व निम्न में कैद था तब उसने पूछा किमने मेरे साथ ऐसा बड़ा भाग उपकार किया कि तुमका फिर मुझसे मिलाया। लड़के ने कहा इस चिट्ठी में लिखा है। अडानों ने जो चिट्ठी खोली तो उसमें लिखा था—“उस नीच शिष्यकार के बेटे के। जिसने तुमसे कहा था कि किसी न किसी दिन तुमको पड़ना”

दिन और दिनों की अपेक्षा बहुत ऊँचा उठता है। ऐसे ही दूसरी ओर पानी बहुत नीचे गिर जाता है। जब सूर्य और चन्द्रमा एक ही सीध में नहीं होते, तब आकर्षण दोनों के आकर्षण के अंतर के बराबर होता है: अर्थात् चन्द्रमा का आकर्षण घट जाता है और इसी से पानी कम ऊँचा उठता है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा २८ दिन में करता है। इस बीच में दो बार सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में आ जाते हैं, (१) पूर्ण-मासी के दिन जब सूर्य और चन्द्रमा सामने-सामने रहते हैं और पृथ्वी बीच में आ जाती है (२) अमावस्य के दिन जब चन्द्रमा और सूर्य के बीच में रहती है यह स्पष्ट है कि पूर्ण-मासी और अमावस्य का पानी सबसे ऊँचा उठता है और गिरता है: इसको अंगरेज़ों में 'स्प्रिंग टाइड' कहते हैं। इसके विपरीत अष्टमी के दिन सूर्य और चन्द्रमा का आकर्षण एक-दूसरे के विरुद्ध होता है इसलिए न तो पानी बहुत ऊँचा उठता है और न नीचे गिरता है। ऐसा महीने में दो बार होता है। इसे अंगरेज़ों में 'नॉथ टाइड' कहते हैं।

— — —

पाठ २२—बरमादा और यमादा

यह भूमण्डल चारों ओर हवा से ढका हुआ है परन्तु दो सौ मील से ऊपर कुछ भाग हवा नहीं है। तब यह बात कि सुनने से यहाँ आधुनिक लोग कहते हैं कि हवा में वायु है। यदि तुम बहुत सी गड़गड़ाना स्थान पर रुकोगे तो ऊपर की हवा के वाहक से नाच की हवा का दबाव कम होगा है। इसी तरह नीचे की हवा नाच और ऊपर की हलक हो जाती है। गर्मियों लगने से नीचे की हवा फल कर हलक हो जाती है तो ऊपर

और फिर एक शीशे की तीन फुट लम्बी नली में, जिसका एक शोर का मुँह घन्द होता है, पारा भर कर और उसके दूसरे शोर का मुँह उस प्याले के भीतर ले जाकर उसे उसमें सीधा खड़ा कर देते हैं। नली के भीतर का पारा कुछ दूर नीचे उतर आता है, परन्तु उन्तीस या तीस इंच तक उस नली में ठहरा रहता है; क्योंकि नली के भीतर तो पारे के ऊपर शून्य है, अर्थात् हवा का कुछ भी दबाव नहीं है, और बाहर प्याले में पारे पर प्रत्येक वर्ग इंच पर साढ़े सात सेंर दबाव है। निदान अब कहीं किसी कारण से हवा कुछ हलकी होगी, नली का पारा नीचे उतरेगा और जितनी हवा भारी होगी, अर्थात् उसका दबाव बढ़ेगा उतना ही पारा ऊपर चढ़ेगा। जितना ऊँचा चढ़ेगा हवा उतनी ही हलकी मिलेगी इसी से जिस पढ़ाई पर जितना पारा नीचे उतरता देखने पर उतनी ही उसकी उँचाई मानी जाती है। इस प्रकार पढ़ाई का उँचाई नापने में बरामीटर बड़ा काम देता है। बरामीटर में एक और भी गुण है वह भी जान लेना चाहिए। अब आधा आने को होता है हवा का दबाव घट जाता है और पारा गिरता है। उसको देख समुद्र में माँझी चतन्य हो जाते हैं और ऊँचत प्रयत्न करने लगते हैं।

२—बरामीटर

साधारण थर्मोबाल में लागू जिन के बरतन में आने बड़ा गरमी है, लोहा गरम है। हाथ में दब पर जो वस्तु गरम लगा उसको कहा कि गरम है जो ठंडा ठंडा उसका कहा कि ठण्डा है अब एक बरतन में गरम जल दूसरे में ठण्डा पानी भर कर एक में डालना हाथ आगे दूसरे में डाली हाथ थोड़ा

गोला गोला होता है। इस गोले में और कुछ दूर तक नली में पारा भरा रहता है और नली का खुला सिरा बंद कर दिया जाता है। इसके पीछे गोले और नली को गलती दरफ में डाल देते हैं। पारा ठगदक पाकर सिमिटता है और नली में नीचे उतर कर ठहर जाता है। उस ठिकाने काँच की नली पर एक चिह्न कर देते हैं। फिर यन्त्र को खोलते पानी के ऊपर भाफ में रखते हैं और जहाँ तक पारा चढ़ना है वहाँ भी चिह्न कर देते हैं। इन दोनों चिह्नों के बीच नली के भाग को कई भागों में बाँट देते हैं। थर्मामीटर कई प्रकार के होते हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध फ़ारनहाइट का है। इन थर्मामीटर में यन्त्र गलने के स्थान पर ३२ का अंक और खोलने पानी की भाफ के ठिकाने २१२ का चिह्न रहना है और बीच का भाग १८० अंशों में बाँटा रहता है। इस यन्त्र से गरमी नापने की रीति यह है कि हवा की गरमी नापना है तो एक गेंदा काँठरी में रखेंगे जहाँ हवा आती-जाती हो। पानी की गरमी जानने के लिए यन्त्र पानी में डाल दें। मनुष्य के शरीर की गरमी जानने के लिए कोख में रखा दें। मनुष्य के शरीर में १००. दस की गरमी होती है। हवा और पानी की गरमी इससे अधिक होने से गरमी लगती है और कम होने से शरद

पाठ - ३. टीडा

मादा टीडी रेत में अपने अण्ड रखता है। वह पहले ओक उसी आकार का एक छेद करता है जैसा पृथ्वी में नासे का पेंसिल का एक छेद गहरी गाड़ने से बनता है। यह छेद वह अपने शरीर के नांग के समान कड़े पिड़ले हिस्से से करती

उसके दोटे पंख निकलने लगते हैं, परन्तु अब तक वह लगभग एक महीने का नहीं होता तब तक वह उड़ नहीं सकता। इस समय वह अपनी कँचली पिछली पार बदलता और गुलाबी रंग का एक पड़ा सा बीड़ा बन जाता है, जिसके रंग-विरंगे पंख जल्द सुखकर कड़े और ऐसे पोढ़े हो जाते हैं कि वह इनके पल सँकड़ें। मील दूध में उड़ सकता है। करोड़ों पूरे कद की टीड़ियाँ दूध में उड़ती हैं और उनके दल कभी-कभी ऐसे घने होते हैं कि उनके निकलने से सूर्य छिप जाता है। यह देश भर में इधर उधर उड़ा करती हैं और कभी-कभी खेतों में उतरकर एड़ी फसल का खा जाती हैं। यह रात को अक्सर पेड़ों पर और भाँड़ियों में घसेरा लती हैं और सूर्य निकलने ही दूसरी जगह जाती हैं।

[illegible][illegible]

तरह से भार डालना ही उचित है। एक और उपाय यह है कि जब कौड़े पृथिवी पर रेंगते हों तब उनको लकड़ी और दहनियों के मुट्टों से या पैरों से कुचल डालें। किसी २ जिले में इस तरह से कई हजार मन छोटी वें पर की टीड़ियाँ मारी गई हैं। परन्तु जब टीड़ियों के पर निकल आने हैं तब सिवाय इसके और कुछ नहीं हो सकता कि वह हल्ला-गुल्ला करके और हवा में फरहरा हिलाकर भगा दी जायें।

जब किसी गाँव में परदार टीड़ियों के आने से हलचल मचती है तब अजय तमाशा देखने में आता है। खो, पुरुष, और बच्चे कोई घड़े लेकर कोई नमस्ते दयाकर, कोई लट्ठा उठाकर, कोई गले में ढाल डालकर, खेनों की ओर दौड़ने हैं और टीड़ियों का डराकर भगा देने के लिए चिल्लाते हैं, ढाल और तसले बजाने हैं और हाथ कपड़े और पेड़ों की दहनियाँ हवा में हिलाने हैं। पत्ता भा टीड़ियों का पीछा करके घड़ों को खा जाने हैं और इस प्रकार से लोगों का उनमें पीछा बुझाने में सहायता देने हैं।

टीड़ियाँ कभी कभी जब सवरे मरती होती हैं ठिठुरका मुन्न हो जाती हैं और जब तक मरने इतना ऊँचा नहीं होता कि उनमें गरमी आ जाय तब तक उड़ने के लिए अपने पर नहीं फैला सकत। उस समय उन्हें पकड़कर लकड़ियों से या किसी और तरह से भार बनाने हैं। गत का जो आग जलाकर पेड़ों पर घड़ी हुई टीड़ियों को जगा और जेड़ बनाने हैं। उस समय वह उड़कर आग में जा पड़ेगा और जैसे पानिया दिया की लौ में गिरकर जल जाता है वैसे ही जल मरेगी।

इनके बड़े बड़े डल मन १००० व २००० में दौलत देना पर ला गये थे और उन्होंने बम्बर हाने के एक हिस्से में अडे

रदेन में विद्या ही भार-बंधु है; विद्या ही देवता है और राज्यों में धन से अधिक विद्या ही का मान होता है। जिनमें विद्या नहीं है वह पशु है।

पाशुवन्द और बल्लवल मोतियों की माला से मनुष्य की उभा नहीं है। नहाने से और डबटन कराने और पालों के कुभारने से लपटा फूलों के गृंगार से भी गरीब की ऐसी उभा नहीं है जैसी कि बेघल पाली की उत्कृष्टता से होती है। गरीबी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणों को लटका करती पिसता नहीं।

जिस पुण्य को लम्बा है उसको कण्व का बड़ा काम, जिस मनुष्य में मोक्ष है उसको और शत्रु पचा चाहिए; जिसको मित्र है उसको आपत्ति का बड़ा काम, जिसको विद्या है उसको और धन की बड़ा आशङ्क्यता है। जिसको राज्या है उसको भूषणों का बड़ा प्रयोजन है, और जिसको सुन्दर कविता की शक्ति है उसको सामने राज्य बड़ा है।

भार-बंधु पर उदारता परजन पर दया, दुष्ट के साथ नटना, भयों के साथ प्रीति राजसभा में नीति, विद्वानों के साथ नटना, दुष्ट के साथ पीठता बड़े लोगों से दया जो दुष्ट इन सबसे बृहत् है और से लोक की अर्थादा है।

अपनी संवर्ति दुष्टि के व्यवहार को हटनी है, वपनों को लक्ष्य की धारा से संयोजनी है मान को दहनी है लक्ष्य को दूर करनी है, विषय को प्रत्यक्ष रखनी है और बाणों और वर्य पीठनार मनुष्यों को बड़ा बड़ा लाभ नहीं पहुँचायी।

वैजयन्ता को बहूव लक्ष्य, ईशमुख स्वामी करेही मित्र, शत्रु दुष्ट, विविध भय सुन्दर लक्ष्य, विषय लक्ष्य

पाँव के स्पर्श से जल उठती है, तब चैतन्य तेजस्वी पुरुष दूसरों के अनादर को कैसे सह सकते हैं।

सब इन्द्रियाँ भी वही हैं, सब व्यवहार पहिले ही से हैं; प्रचंड बुद्धि भी पहिले ही के सदृश है, वचन भी वही है; परन्तु बड़े ही आश्चर्य का विषय है कि बिना धन के वही मनुष्य तण भर में और का और ही हो जाता है।

जिसके पास धन है वही पुरुष कुलीन, पंडित, गुणी, धका और दर्शनीय समझा जाता है। इससे यह बात होता है कि सब गुण सुवर्ण ही में बसने हैं।

घुरे मंत्रियों से राजा का नाश होता है, संगति से तपस्वी का नाश होता है, बड़े लाड़ प्यार से पुत्र बिगड़ जाता है, बिना पदं ब्राह्मण और कुपूत से कुल नष्ट हो जाता है; दुष्टों की सेवा से शील और मदपान करने से लज्जा जाती रहती है बिना देखे भाले खता का और परदेश में रहने से प्रेम का नाश हो जाता है, नम्रता न रहने से अम्रता, अनीति करने से बुद्धि और अभावधान रहने से धन नष्ट हो जाता है।

धन की तीन बातें हैं—दान भाग और नाश। यदि धन न भोगा जाय और न दिया जाय तो अवश्य ही उसका नाश होगा। है गता ' यदि तुम पृथ्वीरूपी गाय को दूता चाहते हो तो प्रजापति बल्लुहे का मन मन धन से पालन करो यदि उसका पालन होगा तो वह बल्लुहे के समान फल देगा

(२) अध दूतन 'जल'

लज्जाघान पुरुष मूर्ख समझा जाता है धन करनेवाला घमंडी, पवित्र मनष्य कपटी और मूर्ख निरंश माना जाता

है। सौजन्य करने वाला मूर्ख और भीड़ा बोलनेवाला प
नाममा जाता है। नेत्रस्त्री घमंडी, चका चकपाही और
विनयाला आलसी इस जगत् में माना जाता है। अथ
वा गुण रह गया है कि जिसको दुर्जनो ने पकड़
रखाया। गुण भी इस जगत् में दुर्जनो के प्रवाद से अ
नामने जाते हैं।

प्रियमे सोम है हमें नुमरे अथगुण की क्या आवर
है ? जो नुमरे है हमें सोम पाव करमे की क्या आवर
है ? अथगुण की सोम तप में क्या प्रयोग है ? नि
मन गुरु है उनको सोम कहने में क्या अधिक वर है
जो अथगुण है उनको सोम गुण क्या आवर ? यशस्वी
व नुमरे नुमरे सोम गुण है ? विद्वान् की नुमरे
क्या अथगुण है ? अथगुण अथगुण है उनको सोम
गुण आवर ।

[illegible][illegible]

इस की श्रवण क्षमता एवं तब के अर्थ की व्याख्या
करके ही हमें यह कहना है कि इस प्रकार का प्रयोग

परन्तु सज्जन की मित्रता दोषदूर के उपरान्त की छाया के समान है जो आरम्भ में कम होती और फिर बढ़ती जाती है।

(४) मुञ्चन-प्रशंसा

सज्जनों की संगति करना, दूसरों के गुणों से प्रमत्त होना, गुह्य से नम्रता करना विद्या पढ़ने में चित्त लगाना, अपनी खो से प्रीति करना लोक-निन्दा से डरना, ईश्वर में भक्ति रखना, अपने को वश में करना दुष्ट की संगति छोड़ना, ये सभ निर्मल गुण जिनमें हैं उन महामाओं को नमस्कार है।

विपत्ति में धैर्य रखना धन होने पर लोभा रखना सभा में अनुग्राह से बोलना मुक्त मन्त्रों दिखलाना यश में रुचि और शत्रु में चित्त लगाना ये सभ महामाओं को स्वाभाविक सिद्ध होते हैं।

अपने किये हुए दान को छुपाना घर पर आये हुए पाहुने का आदर करना और का नन्दा करके खुरख रहना भागों को अपने साथ को दूई भलाई को नन्दा न कहना उन पाकर प्रमगड न करना पगाइ चव निन्दा राह न करना, इन बड़े महिन प्रती को सज्जनों के लिए 'वसन उपदेश' दिया है।

दाय की शाना दान से है 'नर की शाना' अपने से बड़े का प्रणाम करने से है मुख की शाना सच बोलने से है शाना भुजाओं का शाना युद्ध में वारता 'दखाने से है हृदय की शाना स्वच्छता से है कान की शाना शत्रु के सुनने से है और ये हैं धनहीन लोग पर न सज्जनों के भूषण है।

महामाओं का चित्त धन दान पर कमल से भी कमल

या और वह सत्य, धर्म और बुद्धि के लिए प्रसिद्ध था। दूसरा भीम था। जिसका गदा लेकर युद्ध करना यूनान के हरक्यूलीज से किसी बात में कम न था। तीसरा अर्जुन, जो धनुर्विद्या में एक ही था। महाभारत की लड़ाई में इसने बड़ी वीरता और साहस के काम किये। दो और छोटें पांडव थे जिनके नाम नकुल और सहदेव थे। युद्ध में उनका विशेष काम न होने के कारण वे किसी मुख्य उद्योग के कारण प्रसिद्ध न थे।

कौरव सौ भाई थे और महाराज धृतराष्ट्र के पुत्र थे। उनमें प्रसिद्ध वीर दुर्योधन था। यह दुर्योधन अपने परम मित्र कर्ण की सहायता के बल पांडवों की हानि करने को सदा उद्यत रहता था क्योंकि धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रण कर लिया था। इस पान से दुर्योधन को, जो महाराज का जेठा पुत्र था, बहुत फलेंश हुआ इन दोनों के शत्रुविद्या के शिल्पक महान्मा द्रोणाचार्य थे। समय आने पर युधिष्ठिर को युवराज की पदवी मिली। कौरव ने इस पान से अत्यंत विरोध किया। महाराज धृतराष्ट्र अर्धेना थे न, पुत्रों के सामने उनकी कुछ न चली, और अन्त में उनके अपने पुत्र कौरवों का कहना मानना ही पड़ा उन्होंने अपने पुत्र दुर्योधन को युवराज बनाया और पांडवों का वनवास की आज्ञा दी।

इस प्रकार पांडवों का विदेश निकल कुछ काल बीता था कि पांचाल देश के राजा की पुत्री द्रौपदी के स्वयंवर होने का समाचार सुनाई पड़ा। इस स्वयंवर में देश-देश के सब शूरवीर पराक्रमी राजा उपास्थित हुए। स्वयंवर का प्रसंग यह था कि जे कांड एक वांस के ऊपर लटकी हुई मल्लों को परछाईं तेल में देखकर ऊपर का तार चलाकर मल्लों को छाँख में निशाना लगावे वह द्रौपदी के विवाह का अधिकारी हो। द्रौपदी के

पुरुष ने धनुष उठा लिया और क्षण भर में नियम के अनुसार मद्रासी को घेरे दिया। द्रौपदी ने पदे आनन्द से जयमाल इस पुरुष के गले में डाल दी। इस पर कितने एक राजकुमार कुटिलता से यह कहकर खड़े हो गये कि राजकन्या का विवाह अनजान पुरुष से कभी देने न देंगे। जब तक इनकी कुल-मर्यादा प्रकाश न होगी तब तक यह द्रौपदी के विवाह के अधिकारी नहीं है। अंत में इस पुरुष ने अपने को प्रकाशित करके कहा कि मैं अर्जुन और यह मेरे भाई और पांडव हैं। घनश्याम के कारण हम लोग अपना भेग बदले हैं। महाराज धीरुष्णचन्द्र की मार्ली देने पर द्रौपदी का विवाह हुआ।

श्रीपदा का पितापुत्र ज्ञान के अनन्तर पांडवों ने पांचाल
 देश के राजा की सहायता पाकर अठारह भूतनाथों से यह
 काली भजा कि पट्टा की रक्षा के लिये पांचाल सेट जाना
 उचित है इस प्रकार के प्रमाणों पर आह मूकम किया।
 श्री कृष्ण ने भी यह उक्त है कि पांचाल देश का राजा
 राजाद्वारा के प्रमाणों के लिये पांचाल सेट जाना उचित
 है। पांचाल के राजा के लिये पांचाल सेट जाना उचित

[illegible]

महाराज की यह इच्छा थी कि पांडवों को बुलाकर राज्य दे दें; पर कौरवों की कुटिलता खुल गई और पांडव यह समझ गये कि यदि हस्तिनापुर गये तो कुशल नहीं है। निदान यही जड़ महाभारत के युद्ध की हुई और कौरव-पांडवों की कलह में बड़े-बड़े वीरों का होम हो गया। इस युद्ध में पृथिवी के दूर-दूर के राजा युद्ध करने के लिए उपस्थित थे। अंत में पांडवों की जीत हुई और कौरव हार गये। जिस स्थान पर यह महाभारत का युद्ध हुआ था, यह आज तक कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है और इस युद्ध का पूरा वृत्तान्त "महाभारत" पुराण में व्यासजी ने लिखा है। यह महाभारत पुराण हिन्दुओं का इतिहास और धर्म का ग्रंथ है।

पाठ २६--छापे की कल

जिस विद्वान ने पुस्तक छापने की रीति निकाली है उसने मनुष्यमात्र का बड़ा ही उपकार किया है। अब से छापे की कल चली तब से विद्या का प्रचार दिन-दिन बढ़ता ही जाता है। सब पढ़ो ना जो पुस्तकें पाहले बहुत काम की बिकती थी वे अब गली-गली मारी-मारी फिरत हैं अगले समय में मनुष्य बड़ा धर्म और कष्ट उठाकर जिस पुस्तक की वह प्रति महीना में लिखते थे उसकी अब सत्स्रा प्रतियाँ अठ्चारा में छप जाती हैं। पुस्तकों का पाहले पैसा अगले धर कि धना पुण्या र सिवाय उनका कोई मोल नहा ल सकता था। इस कारण कल छापे से धनी पुरुषों का छोट मय अनपट रूप जान थे अब विद्या के मय के प्रकाश के आगे दिन पर दिन गायब का अन्धकार घटना चला जाना है। पाहले पैसा आरम्भ

ने इन कलों को कुछ सुधारा था। बहुत दिनों तक समाज पर धपने रहे, परन्तु शीघ्र बहुत सी प्रतिष्ठा न धपने के कारण बहुत लाभ न हुआ। इन यन्त्रों में हाथ से काम कर पड़ता था, इस कारण प्रतिष्ठा शीघ्र न धपती थी। मन् १८१४ ई० में कैनिंग ने टारम्स नामक समाचार निकाला जो केवल पानी की भाप की शक्ति द्वारा कलें धावा गया। ऐसे लाभ-दायक यन्त्र के निकलने का यह ही फल मिला। इस यन्त्र द्वारा एक घंटे में ११०० ई० एक और धपती थी। इस यन्त्र का कुछ और टीका। पर इसके द्वारा १८०० प्रतिष्ठा एक घंटे में एक मोटा। लगी। मन् १८१४ में कैनिंग ने एक और नया यन्त्र निम्नलिखितमें एक घंटे में ३५० प्रतिष्ठा दोनों और धपने लगे इसके अनन्तर कुवर और विलिंग्टन ने एक और भी। यन्त्र निकाला जिसका द्वारा एक घंटे में १५०० प्रतिष्ठा लगा। कुछ दिन पीछे हा आदि अनेक शिल्पविद्वान् कुशल पुरुषों ने इन यन्त्रों की बेसी उत्पत्ति की कि आ यन्त्रद्वारा एक घंटे में सातह हजार प्रतिष्ठा धपती है। आ टारम्स नामक समाचारपत्र की एक घंटे में यन्त्रों द्वारा ५० प्रतिष्ठा धपता है।

इसकी गति जिस रूप अक्षरों को समझा पर उ धावन की है। अन्तिम नगर के रहनवाले मेडफेल्डर ने वा धावन की गति नकशा की। पिला के मरने पर मेडफेल्डर नामक कपल उस के काम कात्र में अपनी और अपने। का निष्कर्ष न इसका पुष्पक की स्थिति करने लगे। एक न राजा ने पुष्पक के दाय्य रूप अक्षरों द्वारा धपव नगर ने यह सब नगर धपव किसी प्रकार में जा

कोर सहेज उपाय सोखने लगे । पहिले ये तर्जि के पत्र पर
 नाम, साधुन और काजल की स्याही बनाकर लिखने लगे ।
 सूखने से यह स्याही ऐसी कड़ी हो गई कि शोरे के तैराक का
 भी उस पर कुछ छत्तर न हुआ । ताँचा बहुत मँगा होने के
 कारण पत्थर पर किसी प्रकार से लिखने का उपाय सोखने
 लगे । अचानक उनके एक ऐसा पत्थर मिल गया जिसमें
 बिकनार और स्याही सोखने का गुण था । एक दिन साहब
 को उनकी माँ ने धोयी का हिस्सा लिखने को कहा । साहब के
 पान उस समय कागज़ न था । यह बिचारा कि लुट्टी पाने पर
 कागज़ पर इनार नंगा, उन्होंने वहाँ हुए स्याही से हिस्सा को
 पत्थर पर लिख लिया । अब एक प्रति उन्होंने कागज़ पर
 बनवा ली । तब से उन्होंने पत्थर का हिस्सा मिश्रण को धी
 ककम्मान उनके मन में साधना कि लिखना चाहिये कि उसकी
 अब दूसरा प्रति बना सकना कि नही । पहिले उन्होंने
 पत्थर पर लिख लगे कि अब उनका नाम उनका नाम से
 लिख लगे और अब उनके नाम उनका नाम से लिख लगे
 स्याही लग कर कागज़ रखकर पान । पान लगे का पान उनका
 साध । यह बात को पान से उनके हुआ अब करने में नही सा
 सकना । का पान लगे के पान से नही का पान साध लिखना
 में विशेषता । साधना पान पर लिखना नही उन सकना
 तब उन्होंने पान से पान हुए पान से लिख लगे लिखना
 बसक लिखन पर हमें पान से साधना नही पान लिखना साधना
 का लिखन पान । पहिले पान से पान से लिख लगे पान
 स्याही लग लगे पान से लिख लगे पान से लिख लगे
 पान और कागज़ पर लिखन में साधना लिख लगे लिख लगे
 पान लिख लगे पान के लिखना पान के लिख लगे पान के

पाठ २७—यैजमिन प्रकलिन

यैजमिन प्रकलिन अमेरिका में एक बड़ा उद्योगी पुरुष हो गया है। वह केवल अपने ही पराक्रम और प्रयत्नों से योग्यता को पहुँचा। उसके आदि अन्त की दशा मिलाने से निश्चय होता है कि दृष्टि भी उद्योग से घनादर हो सकती है। वह निरा दृष्टि होने पर ऐसा बड़ा विद्वान् और सन्श्लिष्टवान् कैसे हुआ, जो जो संकट उस पर पड़े उनसे कैसे उनको लुटकारा मिला, उसकी कीर्ति कैसे फैल गई इन सब बातों के विचार करने से बहुतों को उसका सा उद्योग करके बढ़ने का उत्साह होगा।

प्रकलिन उसी अमेरिका के वाश्टन नगर में सन् १८०६ ई० में उत्पन्न हुआ था। उसका बाप जोस परस पहिले गैलरड से अमेरिका में आकर आया था। उसका कुटुम्ब बड़ा था। अतएव वह संभल कर खलस था। वह वास्तमान और उद्योगी था। साधारण लड़के के विपरीत अतएव उसका बड़ा बुद्धिमान था।

प्रकलिन के दो भाई थे। उनका नाम था जोस। उस समय उस लड़के की उमर १० वर्ष थी। उसका बाप जोस पहिले गैलरड से अमेरिका में आकर आया था। उसका कुटुम्ब बड़ा था। अतएव वह संभल कर खलस था। वह वास्तमान और उद्योगी था। साधारण लड़के के विपरीत अतएव उसका बड़ा बुद्धिमान था। उसका नाम था जोस। उस समय उस लड़के की उमर १० वर्ष थी। उसका बाप जोस पहिले गैलरड से अमेरिका में आकर आया था। उसका कुटुम्ब बड़ा था। अतएव वह संभल कर खलस था। वह वास्तमान और उद्योगी था। साधारण लड़के के विपरीत अतएव उसका बड़ा बुद्धिमान था।

लगा और खूब के घन्घेस से धीरे-धीरे उसके पास कुछ धन एकट्ठा हो गया।

लंदन में डेढ़ घरस रहकर फिलेडेलफिया को लौट आया और फिर अपने पुराने स्वामी के यहाँ नौकरी करके बहुत सा रुपया कमाया। उस रुपये से उसने एक नया छायाखाना माल लिया और एक समाचार-पत्र निकालने लगा। इस समाचार-पत्र के ग्राहक चारों ओर हो गये और इसकी प्रतिष्ठा दिन-दिन बढ़ने लगी। मरगसि होने पर भी उसने अपने व्यवहार में तनिक अन्तर न पड़ने दिया। बहुतों ऐसा देखने में आया है कि जो हीन दशा से उन्नति पाने हैं, इतगने और औरों को तुच्छ समझने लगते हैं। परन्तु फ्रेकलिन ऐसा न था। ज्यों-ज्यों उसकी बढ़ती होती गई ज्यों-ज्यों और भी नम्र होता गया वह यहाँ तक निर्गममानी था कि याज्ञार से कागज माल लेकर गाड़ों में रखकर आग खाँच लाता था। कुछ दिन पीछे उसने अपना विचार किया। उसका रंग शील-स्वभाव की अन्तर् था। इस कारण उन दोनों में बड़ा प्रेम था। उसने एक बड़ा पुस्तकालय स्थापित करने का काम शुरू किया। उसमें से चन्द 'इन्वेन्शन' के पुस्तकें देखने का मिला करती थी। अमेरिका में यह चाहता ही ऐसा पुस्तकालय था। उसने 'दि बेट्टर वे' अर्थात् 'बेन उन्नत करने का मार्ग' नामक एक पुस्तक रचा। इस पुस्तक में उस देश में बड़ा चिक्की हुई। सन् १७३८ में वह गाँव के कामों पर ध्यान देने लगा। उन दिनों पुलिस की अवस्था अन्तर् न थी, उसके सुधार के लिए बड़ा प्रयत्न करके सरकार से उसने अन्तर् प्रयत्न कराया। उसने आग से हानि होना का बीमा की कम्पनियाँ खड़ी करने के लिए लोगों को उभागा और वह परिश्रम से आगे बढ़ कर

फ्रांसिस जैसा विद्वान भा धर्मवादी स्वदेश-हितार्थी भी था ।
 इन्हीं कारणों उसकी प्रतिष्ठा ऐसी बढ़ी कि राज-सम्बंधी सभाओं
 में उसको कुरसी मिलने लगी और उससे भी मन्त्रि और
 विप्रे में अनुमति ली जाने लगी । अमेरिका के निवासी धर्म-
 रक्षों ने स्वाधीन होने के लिए इंग्लैंड से युद्ध आरम्भ किया ।
 उस समय उन्होंने पैरमिन के फ्रांस के दरबार में अपनी
 ओर से प्रतिनिधि बनाकर भेजा । उसने वहाँ जाकर अपने
 देशवालों से फ्रांसवालों की मित्रता कराई । इस कारण फ्रांस
 और इंग्लैंडवालों में युद्ध हुआ । जिस समय फ्रांसिस फ्रांस
 देश के पेरिस नगर में रहता था उस समय एक शायरलैंड
 निवासी जा वहाँ रहता था बड़ा दुःखी में था । उसने एक
 द्वाग फ्रांसिस से कुछ सहायता चाही । फ्रांसिस ने उसे
 लिखा कि एक सप्ताह इस माह का हुआ तुम्हारे पास भेजा
 जाता है । यह माह मन नष्ट न होना डाला है किन्तु तुम
 इनको उधार समझो आशा है कि जब तुम अपने देश लौट
 जाओगे तुम्हारा जीविका का ठिक न होना जायगा और
 तुम अपने अणु को कुछ स्वयंसेवक बनना सोचो । हाँ पर
 जब तुम किसी पुरुष को ऐसा अवश्य न देखो जैसा अवश्य
 मैं तुम अथवा तब इस य माह के दिन और उस भाँ मन
 जो तुम्हें लिखा है जब देना पड़े करत से तुम उन्नत हो
 जाओगे न चाहता है कि इस माह में तुम स्वयंसेवक बनना
 का काम निकल सकेगा यहाँ नही है तो न भरोड़ा है तब
 मैं जहाँ तक धन पहुँचाने आवश्यक है वह करत चाहता
 है । इसलिाँ मन तुमके यह पत्र लिखा है ।

अतः मैं इंग्लैंड और अमेरिका वालों में सान्ध हो गः
 जिससे अमेरिका वालों स्वतन्त्र हो गये । इस माह में --

तहाँ उन्हें पत्थरों की पट्टियाँ मिल जाती थीं, उन्हें इकट्ठा करके एक दूसरे पर रखके ढोटा सा निवास-स्थान बना लेते थे । इसी प्रकार धीरे-धीरे झोपड़े बनाना सीख गये और बहुत काल के पीछे अच्छे सुडौल मकान बनाने लगे ।

कोई-कोई बुद्धिमान मनुष्य कुछ काल पीछे धातुओं को भी काम में लाने लगे, जिससे इनको और उनकी सन्तान को बहुत लाभ पहुँचा । अब उन्होंने देखा कि पत्थर के टुकड़े और नर्म हथियारों से काम नहीं चलता, नय और कड़ी धातुओं से हथियार बनाना सीखा । इस पर अनेक प्रकार के धातुओं को ठूँढ़-ठाँढ़कर निकाला और उनसे काम लिया । बहुतों का यह मत है कि हाँ न हाँ सोने ही की चमक-रमक पर मोहित हो के मनुष्य ने उसके पदार्थ बनाये हैं । तथा भी बहुत दिनों से काम में आने लगा है, क्योंकि यह धातु भी सुवर्ण की भाँति अकेली मिलती है और नर्म आग लज्जोला होने के कारण उससे सब प्रकार के मनमाने पदार्थ बन सकते हैं । जहाँ जस्ता मिल सका वही उसको ताँबे में मिलाकर गोल बना लिया । फिर इसे गलाकर पत्थर या 'मट्ट' के साँचे में ढालकर किसी प्रकार के हथियार बनाये गये । यह एक बड़ा निश्चय नहीं होता कि पत्थर के हथियारों के बनने परम पीछे पातल के हथियार बनाये जाने लगे । बहुत समय बीतने पर मनुष्यों ने सोने को गलाकर सारु करना सीखा । अब इसे गलाकर ढालने लगे तब ताँबे से गोल का काम लिया गया । इसकी पहली तलवार बुझाली आदि और जल के घेरे और आभूषण आदि बनने लगे । नर्तकी और सामा उनसे पीछे काम में आये ।

प्राचीन काल के मनुष्य घूमा करने के द मूल फल खान और अपने अंदर के लिए किसी वस्तु या पेड़ की छोट में द

प्रबलित करने का अधिहार तब में श्रेष्ठ और सुखिमान् मनुष्यों को दीया और यही उनका गजा कहलाया । जब बिस्तान को अपनी आयस्यवता से अधिष सेती की उपज में मिलने लगा, तब उसने अदला-बदला करना आरम्भ किया । कुछ माज में वह घरघाँसों को घरघाँसों में और हथियार बनानेवालों को हथियार की समयाई में देन लगा । इस तरह अदला-बदली साम्राज्य नीति से चल निकली । पर जब किसी के पास कुछ धन्यु होती और और उसका बदल में वह किसी दूसरी वस्तु को लेता जाता और वह वस्तु बदला करनेवालों के पास में होती । तब वह वस्तु को उपाय कहते थे । इसी से दूर करने के लिए विद्वान् प्रस्तावित करते थे ।

[illegible]

पाठ २६—दिल्ली

यह नगर यमुना के पश्चिमी किनारे पर बसा है। महा-भारत से जान पड़ता है कि सबसे पहिले इस नगर को महाराज युधिष्ठिर ने बसाया और इसका नाम इन्द्रप्रस्थ रक्खा था। आजकल का इन्द्रप्रस्थ देहली के दक्षिण है। अब भी एक स्थान पर एक पुराना किला बना हुआ है जिसको "इन्द्रपत" कहते हैं।

महाराज युधिष्ठिर के मरने के पीछे तीस पीढ़ी तक उन्हीं के वंशवाले राज्य करते रहे। इसके पीछे अनेक वंश के लोगों ने हज़ारों बरस तक राज्य किया, और अन्त में राजा दिलु हुआ जिसने कुतुबमीनार के पास नया नगर बसाया और इसी से यह नगर दिल्ली अथवा दिल्ली कहलाया। राजा दिलु चालीस बरस राज्य करके लड़ाई में मारा गया, और उसके पीछे ७६२ बरस तक दिल्ली उजाड़ पड़ी रही और राजधानी न होने के कारण उस समय में ऐसी तुच्छ गिनी जाती थी कि चीन देश के नामी बौद्ध यात्रियों ने अपनी हिन्दुस्तान की यात्राओं की पुस्तकों में इसका नाम तक नहीं लिखा।

सन ७३६ ई० में या इसके लगभग तैमूर वंश के पहिले राजा अनङ्गपाल ने, जिसका दूसरा नाम बिलानन्द था, दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। इसके वंश में कई राजा हुए और यह ३०४ बरस तक दिल्ली में रहे, और पीछे से अपनी राजधानी कर्नाज को उठा ल गये। संवत् ११०६ में तैमूर वंश का सोलहवाँ राजा अनङ्गपाल ग़र्जर राजपूतों से हार

लाह की कोला पर जा कुतुबमीनार के पास है यह अजर नागरी में लिखे हुए है—“संवत् देहली ११०६ अनङ्गपाल यमी अर्थात् संवत् ११०६ में अथवा सन् १०२७ ई. में अनङ्गपाल ने देहली को बनाया।

गङ्गा चौड़ा है। इसके बीच में यमुना की नहर बहती है। नहर के दोनों ओर घाट, और घाटों के पीछे सड़कें हैं। इसी चौक के पास आमा मस्जिद ऊँचे टीले पर बनी हुई है और देखने के योग्य है। मस्जिद की दो मीनारें ६३० फुट ऊँची लाल पत्थर की और संगमरमर की बनी हुई हैं। इनके ऊपर चढ़ने से सम्पूर्ण देहली और यमुना की शोभा देख पड़ती है। यह मस्जिद छः परस में बनी थी और दस लाख रुपया इसके बनाने में लगा था।

फ़िला के भीतर शाहजहाँ बादशाह ने महल बनवाये थे। इसमें दरबार करने के लिए दीवान खानस और दीवान आम बड़े सुन्दर बने हुए हैं। दीवान आम में एक सिंहासन दस फुट ऊँचा संगमरमर के खम्भों पर बना हुआ है। इसके पृथ्वी में दीवान खानस है। यह निरा संगमरमर का है और इसका दीवानों और खम्भों पर बहुत से मनास फुट बने हुए हैं। इसी में सुन्दर मीनों पर जड़ा हुआ लाल ताऊस रखा रहता था जिस पर बैठकर बादशाह अपना राज कर 'कय' करने थे। दीवान खानस के समीप बना मस्जिद है और इसमें बना हुआ बादशाह का महल और उपवन है। महल का बाह्य मीनों के रहने के लिए पार्क बना रहता है।

देहली में ब्याह्र माल का दूरा पर बुनमाना की लाट है। यह लाट प्राचीन की मस्जिद से उठी है। पहले यह मान खन की बनी हुई थी और मस्जिद से गङ्गा तक था। पाल्नु सन् १३६२-६० में उसका ऊपर में मस्जिद 'बजला से' बना पड़ा। फ़ोरोज़शाह ने इसका पक्का खन नये मीनों से बनवाया और लाट की मस्जिद का बाह्य दूरा सन् १२०० में बुनमाना के ऊपर का घुर्नी गिर गई और बुनमाना मस्जिद के बाह्य

भी है जिसको अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाना चाहा था, परन्तु किसी कारण से पूरी न हो सकी ।

इसी लाट के पास एक बड़ी लोहे की कीली सोलह इंच मोटी धरती में गड़ी हुई है । धरती से ऊपर इस कीली को ऊँचाई चार्लस फुट है । कनिंगहम साहब लिखते हैं कि निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है । एक बार छुपौल फुट तक धरती खोदी गई, परन्तु कीली की जड़ का पता न लगा । यह कीली राजा चन्द्र की बनाई हुई है और सदा के लिए उनकी अमर कीर्ति का प्रकाश करती है । कीली पर श्लोक खुदे हैं । उनसे यह सब विदित होता है । श्लोकों का अर्थ यह है—

जिसका यश भुजा पर खड़ा नग लेखनी में लिखा हुआ है जिसने वंग देश में अपने शत्रुओं के समूह को युद्ध में दार-दार पराजित किया जिसने सिन्धु नदी के सममुखों को पार करके पालिहों को लड़ाई में आता जिसका यशमग धातु आज तक दर्जित समुद्र के सुगन्धित कर रहा है जिसने उदास होकर इस पृथिवी को छोड़ स्वर्ग में वास किया जो अपने सुकृतों से प्राप्त शक्त को देह-रूप में गया है परन्तु यश रूप में पृथिवी में स्थित है जिसके प्रबल प्रताप ने घन की शान्त अग्नि के सदृश पृथिवी को अभी तक नहीं छोड़ा है जिसने अपने बड़े हुए शत्रुओं को नाश किया है जिसने इस पृथिवी पर अपने भुज-बल से उपाजित अतुल राज्य बहुत दिन किया है और जिसका मुख पूर्णिमा के चन्द्र के सदृश चमक रहा है—ऐसे चन्द्र नाम राजा ने विष्णु में ध्यान धर विष्णुपदगार में भगवान् विष्णु की वह ध्वजा स्थापित की है ।

देश से निकलवा दिया। वह अजमेर चला गया जहाँ उसका बड़ा सम्मान हुआ।

खड्गराय कवि जो शाहजहाँ बादशाह के समय में हुए थे, इस कीर्ती का वृत्तान्त और ही लिखते हैं। उनका मत यह है कि व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रथम राजा अनङ्गपाल को एक पद्यांश अङ्गुल लम्बी कीर्ती दी और उनसे कहा कि इसको धरती में गाड़िये। शुभ संवत् ५६२ (सन् ७३५ ई०) में वैशाख वदि तेरस को राजा ने इस कीर्ती को पृथिवी में गाड़ दिया। तब व्यास ने राजा से कहा कि अब तुम्हारा राज्य अखल हो गया, क्योंकि यह काली गंधनाग के माथे में गड़ी है। अब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उनकी बात का विश्वास न कर कीर्ती उखड़वा डाली। पर देखा कि उसमें लोह लगा था। राजा ने डरकर उस ब्राह्मण का फिर बुलवाया और कीर्ती को फिर गाड़ने को कहा। जो परन्तु कीर्ती उखल ही गई तब पृथिवी में धसा और दानों रहा। तब ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारा राज्य इस कीर्ती के सदा साथ रहने लगे। उससे राजा के गले गोहानों के साथ जायगा और उनका नाम अमरमान राजा करेगा ऐसा ही हुआ और अनङ्गपाल ने राजा से उल्लास गाढ़ा कर गान्य रहा। कुल नाग यह ना कहने लगे कि इस कीर्ती के दानों से जानें कि इसका नाम राजा अमरमान है। तब वह गढ़ गया।

दिल्ली में अनङ्गपाल ने उस वंश के अनङ्गपाल को बुलाया जो मार ममार से ममार है। अनङ्गपाल ने कहा कि या जोर धाँडा हो। अनङ्गपाल ने कहा कि मिये व हुमायूँ का मकदना कम्पना खान। अनङ्गपाल ने कहा कि राजाधरा और मफ्फर तू का मफ्फर कादि अनङ्गपाल ने उखलें गोम्य।

और वहाँ के राजा को रानी के पास दासी बनकर रहने लगी। मंगेय से उसके पिता के भेजे हुए ब्राह्मण दूँदते-दूँदते वहाँ आ निकले और उसे पाकर विदर्ग नगर में ले गये।

[illegible]

पढ़ने पर मनुष्य की भक्ति ठिकाने नहीं रहती। इतना कहकर
जल पिए रोने लगे।

केशिनी ने उनकी दशा देख यहाँ से जाकर सब समाचार
दमयन्ती से कहे। सुनते ही दमयन्ती ने जान लिया कि यहाँ
मेरा स्वामी राजा नल है। केशिनी से कहा कि फिर तुम्हें उनके
पास जाकर देख कि ये क्या कर रहे हैं और मेरे लड़के-
लड़की को भी अपने साथ लेती जा। जब ये सब राजा नल के
पास आये तो लड़के-लड़की को देख राजा नल को आँखों से
आँसु की धारा बह चली और नल दोनों को छाती से लगा-
कर कहने लगे कि ऐसे ही बेटा-बेटी मेरे भी हैं बहुत दिन से
मैंने उनका नशा देखा है इनका देखकर उनकी मुधि मुझे
आ गई। अब इनका इनका भी व पास पहुँचा दे। ये अनाथ
आज नल के लड़के हैं, एक बिराद दूसरे बिराद जायेंगे। स्त्री
ही भय है कि वह बिरादों में दूसरा घर लेती है।
राज दान में दमयन्ती ने नल के लड़के-लड़की दमयन्ती
को सब दवाएँ दिलाईं और नल के लड़के-लड़की दमयन्ती

[illegible]

जानता है। प्रतिभता रही आपने स्वामी का अथगुण १३०
भी उसकी निंदा नहीं करनी। तुम ने। कल किसी दूसरे के
हो आभोगी, इन यत्नेके मे अब मुझे क्या काम है। हा
कमपत्नी हाथ जोड़कर बोली कि आपके सुनाने के नि
राज्ञा अनुपम के पास स्वयंवर का पत्र लिखाया था। प्रे
विद्या दूसरे विद्या का नहीं था नहीं ने। बहुत से राज
दली जाने। मरी प्रतिभा थी कि आज आप से भेट न हो
ना मे आज मे जल्दकर सर जाऊगी।

निशाम यह सब समाचार राजा सीमसन और अनुपम के
नाम पहुँचे। इस बात का मनकर न। बहुत प्रसन्न हुए। राजा
अनुपम ने मन्त्र से प्राप्ति का कि मन्त्राज्ञ। मुझसे बड़ी मू
हू कि अनुपम मेन आपका पालनिक काम पर रक्खा। मे
अपराध का आप जमा कीजिये। पर करके अयोध्या के चले
गये। सीमसन ने राजा मन्त्र से कहा कि आप अभी निर
दग का न जायें। मन्त्राज्ञ कीजिये और इसी जगह रहिये।
नरसु मन्त्र से मुनिकाल से रहना अच्छीकार न दिया और अ
दग में जान न निर दद दिया। राजा सीमसन ने एक रथ
मन्त्र दायी करके ली। ऊँच और नीचा देखा देखा
निर दग का विदा दिया और समझना का चले गए ही रक्ख

राजा नल ने निपट घेरा में पहुँच अपने भाई पुष्कर को बुलाकर यह कहा कि एक बार हम-तुम फिर चौपट खेलें; मैं हारूँ तो तुम्हारा दास होकर रहूँ और जो तुम हारो तो मेरा सारा हारा हुआ राज्य फेर दो। अब की पारी भगवान् की पेंसी दिया हुई कि राजा नल जीते और पुष्कर हारा और भारे डर के काँपने लगा। तब नल ने समझाया कि इसमें तुम्हारा क्या अपराध है यह सब अपने दिनों का फेर है। जिन प्रकार पहिले काम करते थे उसी प्रकार करते रहो। फिर नल ने दमयन्ती को भी बंटा-बंटी समेत चिदम्बर नगर से अपने पास बुलवा लिया और यह बहुत बाल तक मुख-चैन करते रहे।

पाठ ३१ - धौलाट व दात

[illegible]

प्रतिफल = दरपिन्ना, इन्टा

मान = दाप

गंद = घर

मृ - लड़का

सुखा = इहं

द्वारा = मंत्री

जे ज्ञा मे धम ते विविध , विद्या धन चित् ताह ।

सञ्ज्ञाहि एतहि सुज्ञानं न सुखं पादं मनो भार ॥६॥

धर्म से पिछा पावें धर्म ही से धन होत ।

धर्म ही सें सुख होत हैं धर्म यिन लहें न पोर ॥२॥

धर्म ही संस्थाधिकार पुनः लक्ष्य मनुष्य अधिकार ।

ਦਿਨ ਧਰਮ ਕਾਰਜ ਹਾਥ ਨੀਂਹ ਧਰਮ ਸੁ ਫੁਲ ਨਸਾਏ ॥੨॥

ਪਾਸੀ ਪੁਸਤਕ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ੨੯ : ਸ਼੍ਰੀ ਮਧੂ ਅਰ ਧਾਮ

પ્રમુખ શ્રી સુવર્ણ ચંદ્ર વલ્લભ દાસ

५८८ ५९० ६०० ६१० ६२० ६३० ६४० ६५० ६६० ६७० ६८० ६९० ७०० ७१० ७२० ७३० ७४० ७५० ७६० ७७० ७८० ७९० ८०० ८१० ८२० ८३० ८४० ८५० ८६० ८७० ८८० ८९० ९०० ९१० ९२० ९३० ९४० ९५० ९६० ९७० ९८० ९९० १०००

ନିମ୍ନଲିଖିତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ୧୫.୧୨.୧୯୭୫ରୁ ୩୧.୩.୧୯୭୬ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ

ମୁଖ୍ୟ ଲେଖକଙ୍କ ନାମ : ଶ୍ରୀ ରାମଚନ୍ଦ୍ର ମହାପାତ୍ର

ਭਗਤ ਨਾਥ ਜੀ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ : ਸੁਖ ਭਵਿਖਤ ਹੋਵੇ ॥

ה'תש"ח 24.12.57

৫৭ ১২৫ ৭ ১০ ৫৫ ৬৬ ৫১ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

[illegible]

9. 214 43 '52. 1. 1-14 45 48 2 45 2 1

1950 11 25 1950 11 25 1950 11 25

1990 年 12 月 10 日

SAB ■ **FILED** **AT** **NEW YORK**

2008-09-01

समा खट्ट लीने रहे , खल को कदा दसाय ।
 अगिन परा गुन रहित धल , आपदि ते बुझि जाय ॥६॥
 जहाँ रहे गुनघन नर , ताकी शोभा होत ।
 जहाँ धर दीपक तहाँ , निहर्न करी उदोत ॥७॥
 सेवक तोर जानिये , रहे विपति में संग ।
 तन दया ज्यों धूप में रहे साथ एक रंग ॥८॥
 दुष्ट रहे आँख पर ताकी कर दिगाए ।
 कागि जहाँ ही राखिये जारि करी तँहि दार ॥९॥
 धन कर बौद जो खल को दाऊ एक मुभाय ।
 बर में साधन दिनक म दिन म कर ते जाय ॥१०॥
 धन कर साधन का नरक बढी बरिये नाहि ।
 दलत ही मिल जात है उपाचार की दाहि ॥११॥
 दान दान ब नानुय दान दान की पार ।
 कोप न ताकी नानुय आज दान दान ॥१२॥
 दान दान न दान दान दान दान दान दान ॥१३॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१४॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१५॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१६॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१७॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१८॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥१९॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२०॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२१॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२२॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२३॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२४॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२५॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२६॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२७॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२८॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥२९॥
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥३०॥

दुख पाये विनहूँ कहूँ, गुन पावत है कोय ।
 सदै वेद बन्धन मुमन, तब गुन संयुत होय ॥२१॥
 जे चेतन ते क्यों तत्रिं, जाकी जासों मोह ।
 शुभ्यक के पीछे लग्यो, फिरत अचेतन होह ॥२२॥
 सरमुति के भंडार की, बढ़ो अपूरय बात ।
 ज्यों रखे स्यों स्यों बद्धे, विन सरचे घटि जान ॥२३॥
 कहै बचन पलई नहों, जे सत पुरुष सघीर ।
 कहन सयै हरिबन्ध नृप, मर्यो भीच घर नीर ॥२४॥
 मति फिरि आय विश्वि में, राय रंक एक पीति ।
 हेम हरिन पाछे नये राम गँवाई सीत ॥२५॥
 पूजनीय गुन तें पुरुष ययम न पूजित होय ।
 यक्ष तिलक किय कृष्ण के, छाँड़ि बद्धे सय कोय ॥२६॥
 लोकन के अपवाइ का, डर करिये दिन रैन ।
 रघुपति सीता परिहरी मुनत राजक के येन ॥२७॥
 विपति परेहु देखो मन पुरुषन को काम ।
 राक्ष विनाशन को दियो वसी विरियाँ राम ॥२८॥
 करिये मना मुहावना, मुख त बचन प्रकाश ।
 विनु समझ शिशुपाल का, बचनन भयो धिनाश ॥२९॥
 अशुभ करन ही होत शुभ, मज्जन बचन अनूप ।
 भ्रमण पिता दिय दशगर्वाह शाप भयो सर रूप ॥ ३०॥

(१२१)

पाठ ३४—दोहे (विहारी की सतसई से)

विदारनहार = विनाश करने-

= करोड़ों

= छोटे

हिं = ऐंड़ी वैं दो

य = (दीर्घ) = बढ़े

रीत ह्ये = पुरी दशा में
रहकर

गवि (चडु) = धारा

कतान दे = ताली बजाकर

मागता = चतुराई

गमेले = गैवार

मये = बहुत

महान = दरता है

निकल क (निकल ७) =

६७ बरहित

मदक = चन्द्रमा

नार = पानी

जोय = देखा

मलिन = पानी

गरोज = ताजमहल से देखा

मनिमन्थ = मृग

विहद = बढ़ाई

बहुपति धीकृष्ट

सई = सिद्ध होता है,
निकलता है

कावे = कचे

नार्वे = छाट'वर काते हैं, नाच-
कर रिक्ताते हैं

रावे = प्रमद हैं

मजन = ईश्वर का नाम लेना,
मागना

वरिया पनवार

मोधि सीधा बर, पाद का

पादन (पापाण पाधर

मोधि - समुद्र

मदन ५२

५२ १ १५ ३५

२१ २१ १५ १५

२१ २१ ३० मगवान न
दिवा है

२१ २१ - २१ २१

२१ २१ = २१ २१

२१ २१ = २१ २१

कनक - सोना, धूरा

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि धीव ।
 नल बल जल ऊँचा घड़े, अंत नीच को नीच ॥१॥
 थोड़े घड़े न है सकैं, लगि सतराई पैत ।
 दीरघ होहि न नेकहु, फारि निहारै नैन ॥२॥
 भीत ! न नीत गलीत है, जो घरिये घन जोरि ।
 छाये खरचे जो बची, तो जोरिये करोरि ॥३॥
 घर घर डोलत दीन है, जस जन जीषत जार ।
 दिये सोम बसमा खनि, लघु पुनि बड़े लखार ॥४॥
 बसे बुगई जामु मन नाही को सनमान ।
 भलो भलो कहि छोड़िये, रंगे प्रह जो वान ॥५॥
 मयै हंसन कगलत है नागरना के नाथ ।
 गयो गरब गुन को मयै, बसे गंगेले नाथ ॥६॥
 बुगै बुगई जो नजे, तो मन खरो सकात ।
 ज्यो निकलक मयदू लखि गने लोग उतपात ॥७॥
 को कहि सके बड़ेन मो, लखि बड़ोयो भूल ।
 दीन्हें दां गुलाब के इन डारिन ये फूल ॥८॥
 नर की अर नल नीर को गति एक करि जोष ।
 जेना नाथा है खले, तेना ऊँचा होय ॥९॥
 बहुत बहुत मयनि मलिन, मन मरोज पटि जाय ।
 घटन घटन फिर ना घई, घटममूल कुंभिलाय ॥१०॥
 का लं मोघ मरगई है, मयै रह गहि मोन ।
 गंधी ! गंध गुलाब के, गंधै नाहक कीन ॥११॥

कर फुल्ले को आचमन . भीठो कहत सराहि ।
 पंगो ! मतिअंध तू , अंतरदिखावत काहि ॥१२॥
 बड़े न हजे गुनन बिन , विरद बढ़ाई पाय ।
 कहन धतूरे सो कनक . गहनो गढयो न जाय ॥१३॥
 चले जाहु हाँ को करत . दाधिन को ल्योपार ।
 नहि जानत या पुर यसत . घोवी श्रीं ड कुम्हार ॥१४॥
 संगति सुमति न पावही , परं कुमति कं धंध ।
 राखहु मंलि कपूर में . हांगन होत सुगन्ध ॥१५॥
 कनक कनक तें सौगुनी भादकता अधिकाय ।
 वह खाये घोरात है यह पाये चौराय ॥१६॥
 को छूट्यो यहि जाल परि कत कुरङ्ग अकुलाय ।
 ज्यों ज्यों सुगमि भज्यो वहें . त्यों त्यों अरु भक्त जाय ॥१७॥
 कोऊ कोरि क संग्रहो कोऊ लाख हजार ।
 मो सम्पति यदुपति सदा विपान विदारणहार ॥१८॥
 जप माला दायो निलक . नर न एकी काम ।
 मन कांचे नांचे बूधा सांचे राने राम ॥१९॥
 जगत जनायो जिहि सकल सा हरि जान्यो नाहि ।
 ज्यों आखिन सय देख्यो आखिन देखी जाहि ॥२०॥
 भजन कही ताते भज्यो नज्यो न एकी पार ।
 दूर भजन जाते कही सो न भज्यो गंचार ॥२१॥
 यहि चिरियो नहि श्रीर की न करिया उहि सोधि ।
 पाहन नाच चढाय बिन . झिन्ही पार पयोधि ॥२२॥

= घेना, धीन खेना

= ननुषों का पालने-
वाला (रामा)

गीत = गुराहं

गु = गुह मुनि का नाम

गर्गा = संसार का रचने-
वाला (ईश्वर)

गर्दि = जो सब दिन ॥ रहे

गर्ग = गामी

गर्ग = गेह

गर्ग = गाय रहना

गर्ग = गर्दिमा

गर्ग = गर्ग गुर्व

मुबुध = पंडित

अवतंस = भूपय (शिरोमणि)

नमत = मु॥ जाती है

लखाय = देख पड़े

पाखान (पायाय) = पापर

मदिरा = शराब

गर्ग = बदती

अपहाय = पापी

सर्वस्य (सर्वस्य) = सब बुद्ध

मोक्षन करत = छे छेते है

का = हाथ

का = २ वरक

मरपति नमन बुमन सं ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
पिनसत मुन आन ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
पायक दंती राजा ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
दे धोदं है पलाय ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
मोक्ष करिष अयमुन ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
मोक्षन करिष अयमुन ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
का म गुन अयमुन ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
दात पदम है वरिष ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
लेन का म अयमुन ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥
का जान करि करि ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

(१२७)

नहीं कोट रोग सम . सुन सम नहीं कोउ प्रीत ।
 न सरिस कोउ बल नहीं , विद्या सम नहीं भीत ॥१७॥
 जन संग अनहित करै , ते हित करै निदान ।
 ते भृगु मार्यो चरण , हर धार्यो भगवान ॥१८॥
 न अनित्य संगी धरम . प्रभु जग कर्ता सोय ।
 नौन बात जो जानै तासों खोउ न होय ॥१९॥
 सय परतिय जिहि मातुसम सय पर धन जिहि धूर ।
 सय जीवन निज सम लखें सो पंडित भरपूर ॥२०॥
 वियहि कंत पुत्रहि पिता शिष्यहि गुरु उदार ।
 स्वामि सेवकाहि देवता यह धृति-मन निर्धार ॥२१॥
 करिये विद्यायन्त्र का सेवन अरु सहवास ।
 नासों आर्वाहि आमत गुन अवगुन होहि विनास ॥२२॥
 बनी यात विगारं नुरत व्यगरी वन न नात ।
 काँच कलस फारिय पटाव , पुनि न जुं कोउ भाति ॥२३॥
 परिहृत पासहुं रहत ये मरत समस्त नाहि ।
 जिमि प्रभाव जान नरा मोन गंगजल माहि ॥२४॥
 कषहुं नमं नाहि मुख जन नमन सुख अवनम ।
 आम डार फल सह नमन नमन न निष्फल वंस ॥२५॥
 प्राण जाय तो जाय प नहा दण्ड हट जाय
 जरी परी रमरी नदीपे पेटन प्रगट लखाय ॥२६॥
 काढ़े नल पखान सो फल वन क माहि
 ऊसर में शकर कढ़े पे खन मे गुन नाहि ॥२७॥

(१२५)

विद्यावन्तहिं चाहिये, पहिले धर्म विचार ।
तासों दोऊ लोक को, सधत शुद्ध व्यवहार ॥ ४० ॥

पाठ ३६—विदुरनीति

दोष = दोष, बुराई

दोषता = दोषता है

धर्म = धर्म

धर्म = धर्म

धर्म = धर्म

धर्म = धर्म

धर्म = धर्म

धर्म = धर्म

मालिक (राजा)

गोद = ध्यानन्द में

गोद = ध्यानन्द में

धर्म = धर्म

राजाह (नरनाथ) = मनुष्य
का स्वामी (राजा)

शस्त्र = हथियार

गुह = गुह

दण्ड (दण्ड) = दण्ड

दण्डन = दण्डन

संनपाल = फौज का सदांर

स्वच्छ = दोषरहित, उत्तम

हृदयभीरु = जी का डरपोक

आयुध का व्यवहार = हथियार

चलाना

मन्त्रिपार = पृथिवी का मालिक,
राजा

वर = वर

यथार्थ (यथाथ) = ठीक-ठीक

शिरामणि = शिर का भूषण
(रत्न)

पर = पर

अपराध = अपराध

अपराध = अपराध

अपराध = अपराध

अपराध = अपराध

अपराध = अपराध

अपराध = अपराध

दंशन = दन्तदण्ड

अनु = अवन

रमन शमन = दौरी का उतारना-

अनु (वर) = कर्त्तव्य, दण्ड

बाला

नंति = उर

सावधान निज राज में, दित अनदिन पहिचान ।
 पर छिट्टहि जो लखत सो, नृप सचन बुधिमान ॥१॥
 अलस प्रमादी राग गति, नंति न देखत जैन ।
 उर सद असद विवेक नाहि, अधम अवनिपति तैन ॥२॥
 स्वामी हित इच्छा सहित, सावधान नव राज ।
 राखे प्रजा समोद सो, नंतिन को सिरताज ॥३॥
 जो लालच भय भोर सठ, स्वामी हितहि न चाह ।
 सो नंतिन में अधम तेहि, नाहि राखे नरनाइ ॥४॥
 शत्रु शत्रु जानै सय, व्यूहादिक में दृष्ट ।
 स्वामी हित इच्छत सोई, सेनगल है स्वच्छ ॥५॥
 हृदय भोर जानै नहीं, आयुध को व्यवहार ।
 सो सेनापति अधम तेहि, नाहि राखे महिपाल ॥६॥
 धीर धर्मी दुश्मन शमन, मुरे सो शत्रु हड्ड ।
 वृन सम अनु जलु रतन सम, जो समुर्क सो मूर ॥७॥
 समर सख सन्मुख निरखि, तके भीति भरि नैन ।
 सो कादर संतार में, आदर योग्य भई न ॥८॥
 परम चतुर बुधिमान वर, कई यथारथ जैन ।
 गिरधरदास बखानिये, दूत शिरोमनि तैन ॥९॥
 भय सो स्वामि संदेश जो, कहि न सकै पर पात ।
 अपटु लालची दूत सो, तजिये गिरधरदास ॥१०॥

पट्टे - बलावत

काल - लीला

राम राम का हँस का जीवन

जग (का) का जीवन बहाई

बाता

जीवन - ३४

साधना निज बाज में हिन समहित पहिवात ।
पर टिड्डीत आ लखत था नृप बलम दुधिमाल ॥१॥

अत्यन्त प्रसादी बाज गति नीति न देखत डील ।
उर बर अत्यन्त धियव नहि सखम अवागवति माल ॥२॥

आमी 'हल हल' बाजत सब मान सब बाज
बाज प्रसन्न स्वामी सब भावन व 'सबनाई' ॥

हो लाहरी नय नील सब स्वामी 'हलहि न था
सब भावन न अधीन न नील भाव, नवनाई ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
आमी 'हल हल' बाजत सब भावन व 'सबनाई' ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
सब भावन व अधीन न नील भाव, नवनाई ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
नयनीय का प्रसन्न भाव न नयनीय व 'सबनाई' ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
नयनीय का प्रसन्न भाव न नयनीय व 'सबनाई' ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
नयनीय का प्रसन्न भाव न नयनीय व 'सबनाई' ॥

॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
नयनीय का प्रसन्न भाव न नयनीय व 'सबनाई' ॥

फूलें बानस सबाल मरिह लुटारं । जनु पयोंछल मगट सुटारं ॥
 उदित अगान पन्थ जलसोखा । जिमि लोनाहि सोअये स्वतोया ॥
 सरिता सर निर्मल जल सोटा । मन्त हृदय जस गन मद मोटा ॥
 रस रस मूल सरित सरपानी । ममता त्याग करहि जिमि पानी ॥
 जानि शरद आनु खजन आये । पाय समय जिमि सुकृत सुदाये ॥
 पंक न रेणु सोह अस धरनी । नीति निपुण नृप की जस करनी ॥
 जल संकोच पिकलभय मीना । विविध कुटुम्बी जनु धनहीना ॥
 विन घन निर्मल सोह अकाशा । जिमि हरिजन परिहरि सय आशा ॥
 शङ्ख कटु वृष्टि शारदी घोरी । कोउ एक पाय भक्ति जिमि मारी ॥
 दोहा—भले हरि नजि मगर नृप, तावस यणिक भिखारि ।

जिमि हरिभक्तिहि पाइ जन, तजहि आधमी चारि ॥

मुखी मीन जहै नीर अगाधा । जिमि हरि शरण न पकी याधा ॥
 फूलें कमल सोह सर कैसे । निर्गुन ब्रह्म मगुन भये जैसे ॥
 गुजत मधुकर निकर अनूया । सुन्दर खग रय नाना रूप ॥
 चक्रायक मन दुख निशि पेखी । जिमि दुर्जन पर संवति देखी ॥
 चानक रटत नृप अति घादी । जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही ॥
 शरद तापनिशि शशि अवहर्ष । सन्त दरश जिमि पातक दरद ॥
 देखहि विधु चकार समुदाई । चितवहि जिमि हरिजन हरिपाई ॥
 मशक दंश पीतं हिमप्रासा । जिमि ठिज द्रोह किये कुलनाशा ॥
 दोहा—भूमि जीव संकुल रहे, गये शरद आनु पाय ।

सतगुरु मिले न जाहि जिमि, मंशय भ्रम समुदाय ॥

तनपा = कन्या, बंटी
 अशौचिक = लोक से विरुद्ध,
 अनोखा

दुर्गत = पवित्र
 दोभा = विकल हुआ
 विधाता = प्रह्ला
 लहहि = पाते हैं
 दीहि (दृष्टि) = निगाह
 मज्जन = मँगाता, भिलारी
 मकरन्द = फूल का रस
 मधुप = मधु पनिषाण भाँरा
 मनर्षता = मन के चाहें हुए
 शावक = बछा
 निव (श्वेत) = सफेद
 ध्वज (ध्वजा) = ध्वज
 निधि = खजाना
 परिहारि = त्याग द
 निमेष = पलक का गलब
 शक्ति = चन्द्रमः
 भोरी = भोला भाँरा
 लताभिवन = कु
 जलद = जल देनेवाला (जल
 पटल = तह (पत्र)
 विनाश = पाट करके
 पान (पाणि) = हाथ
 पन (प्रद) = प्रतिज्ञा

गहर = देर, विलम्ब
 समीता = डर कर
 गूढ़ गिरा = गुप्त बात
 मिस = बहाना
 बहोरि २ = बार बार
 गिरि-राज-किशोरी = पहाड़ों
 के राजा (हिमालय) की
 कन्या पार्वती

तव = तेरा
 धादि = शुभ
 मध्य रात्रि
 अवमाना = घम
 अमिन = अनुलिन, बहुत
 प्रभाव = गौरव
 पन कर = धर्म अर्थ, काम
 मोक्ष

मन = सहज
 वरदा पति = वर देनेवाला
 विदुष १ विदुष देव के दास
 (विदुष)

विजय = मज्जन
 वेदेष्ट = उद्देश (जनक विजय
 मुक्त दुष्ट के अनुभव से
 धर्म के उद्देश जनक
 मन्त्र भाग = मन्त्र विमल पद
 गिरि

पाठ ३६—सीताजी का स्वयंवर (रामायण से)

स्वपंथर = यह विवाह जिसमें
कन्या घर को पसंद कर
लेती है। यह विवाह केवल
राजाघों में प्रचलित था।

अन्ध = विचार-रहित

अवगाहा = होना

मनर = लड़ाई

सूदेश (स्वदेश) = अथपत्नी २

भाजन = पात्र

जगह, अरना टार

घर = धेए

दृग्दृशी = महारा

सत्यज्ञान - वह ज्ञान महा पक्ष

ऊदरा = दर्द

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कॉनव = भौवहा, अकवहाप

डाढ बुड रं

ਬੁੱਢਿਸ = ਭਗਵਾਨ ਹਰ

अनुप्रास = अनुप्रास

नः ताह = नरपति, राजा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

—६६— मृत्यु हांक

1 - 1000

५३३ ६३ ५३

15. 16. 17.

$$1 - \frac{1}{2} = \frac{1}{2}$$
$$\frac{1}{2} \mathbf{E} = \mathbf{A}.$$

2 2 2

1. $\frac{1}{2} \pi$ 2. $\frac{1}{2} \pi$ 3. $\frac{1}{2} \pi$

• $\frac{1}{2} \leq \frac{1}{2} \leq \frac{1}{2}$ •

$$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} \dot{\theta}^2 \right) = \frac{1}{2} \dot{\theta}^2$$

• 2020 年 4 月 4 日 •

— 277 —

2000 2001 2002 2003 2004

$$\mathbb{E}[\mathbf{z}^T \mathbf{z}] = \mathbf{I} + \mathbf{A}^T \mathbf{A}$$

2000

ה'תש"ח

— *Journal of the American Medical Association*

2000

$$1.17 = 1.18 = 1.19$$

५५५ = १५५५ ५५५

ॐ नमः = नमः

धर्मशाला = धर्माश्रम

रमा = शृंगिषी

रमानल = पाताल के नीचे

बेहि लंगि = जिसके लिए

कानन = वन, जङ्गल

धर्मपुर = देवताओं का नगर

(स्वर्ग)

अवास - घर

विषयस = भोग-विजय

माल्य - माला

कुलिश = वज्र

निर्दर निरादर करके

अग्नि हट्ट

रूप = पथ

भव = रूप

पावस - नीच

जय पद

प्रज' पच - प्रज' ल' ॥

प्रदीप = पीड़ित, पक्षी दुःख

धारणी = मंदिर

रूपधार = इलाज

विराजि = महिमा

सुगेन = सुख से

सधराधर = रत्न, जड़

लाह = लाभ

अदिन पुरे दिन, कमवाती

मुदि (मुष्ट) = अत्यन्त अस्पृष्ट

सरलचिन्त - सीधा स्वभाव

वृत्ति = घर

पाच - अधम नीच

द्वारि (आवासी वन की

आग जलन

मदन = घर

धरि = शत्रु

वाम - विरुद्ध

सा०-भरत कमल कर जारि धर्म धुरन्धर धीर धरि ।

यचन आमय जनु वारि देत उचित उत्तर सयहि ॥

मोहि उपदेश दीन्ह गुरु नाका । प्रजा मांखि सम्मतसबहीका ॥

मानु उचित पुनि आणसुदीन्हा । अवाशि सीसधरि चाहियकीन्हा ॥

गुणीपुनु मानु स्वामिहित बानी । सुनिमन मुदित करिय भलजानी ॥

उचितकि अनुचित किये विचारु । धर्म जाइ सिर पातक भारु ॥

वरन "दीनदयाल" पार पुनि भेट न होई ।
 अपनी अपनी गैल पथी जैहें सय कोई ॥५॥
 ग्राहें प्रयत्न लगाध जल यामें तीक्ष्ण धार ।
 पथी पार जो नू खदै खेवनहार पुकार ॥
 खेवनहार पुकार बार नहि कोऊ साथी ।
 और न चलै उपाय ताव यिन पदो पथी ॥
 वरन "दीनदयाल" नहीं अब यूँ पाई ।
 रहे महा मुख पाय प्रसन को भारी ग्राहें ॥६॥
 चारों दिशि सूँ नहों यह नद धार अपार ।
 नाव जर्जरी भार यह खेवन हार गँवार ॥
 खेवन हार गँवार ताहि पर है मतवारो ।
 लिये भँर में जाय जहाँ जलजंतु अखारो ॥
 वरन "दीनदयाल" पथी ! यह पान प्रचारो ।
 पाहि पाहि रघुवीर नाम धरि धीर उचारो ॥७॥
 हारे भूली गैल में ने अति पाँय पिराय ।
 सुने पथी अब तो रहो धोरो सो दिन आय ॥
 धोरो सो दिन आय रहे हैं संग न साथी ।
 या वन है बहुत आग भोग मतवारो साथी ॥
 वरन "दीनदयाल" ग्राम सामीप तिहारो ।
 सूँ पथ को जाहु भूति भरमो किन प्यारो ॥१०॥

पाठ ४४—मिथ प्रतापनारायण कृत (प्रेमपुष्पावली से)

शरणागत = शरण में आया हुआ वरणा = दया

पाल = पालनेवाला

विस्तारी (विन्तारी) है = फैलाई

हितकारी = हित करनेवाला

है

प्रतिपाल करना = पालना

शुद्धिहार = शुद्धिमान

पा(अपा) = दुःख

पारी = प्यार के

दान = निरुद्ध, निरा

प्रिय = आत्मा

कह = हीनता का निरुद्ध दुःख

(कमल)

पार = पार

दम = दम

पलायन बाल कपाल प्रभो

दम नम दूध का आ काक

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

नम नम नम नम नम नम

शान्तिविशेष = शान्ति के घर

माया = कला

भूतन = द्वापरा है

विष्णु से मुक्त मोती = मोती

योग्य

मोती = मोती

माया = विष्णु

माया = विष्णु, शिव

दमका एक आग मुझारी है।

नम नम नम का शिवकारी है।

शान्तिहीन दुःख विमोचनी है।

यम केन विमोचनी है।

दुष्ट का विमोचनी है।

यम केन विमोचनी है।

शिव का नम नम नम है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम दुष्ट नमारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

नम नम नम शिवकारी है।

यदि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाय "प्रताप" हरी, केहि के अय और सहारे हो ॥२॥

साथो मनुआ अजय दिवाना ।

माया मोह जनम के ठगिया, तिनके रूप लुभाना ।
दुल परपंच करत जग धूनत, दुख को सुख करि माना ।
फिकिर तहाँ की तनक नहीं है, अंत समय जहँ जाना ।
सुख ते धरम धरम गोहरावत, करम करत मन माना ।
जो साहेब घट घट की जानै, तेहि ते करत पहाना ।
तेहि ते पूढ़त मारग घर को, आपहि औन भुलाना ।
हियाँ कहाँ सज्जन कर वासा, राय न इतना जाना ।
यदि मनुआ के पाछे चलि के, सुख का कही ठिकाना ।
जो "प्रताप" सुखद को चीन्हे, सोई परम सयाना ॥३॥

जागो भाई जागो राति अय धोरी ।

काल चोर नहीं करन चहत है, जीवन धन की चोरी ।
आंतर चूके पुनि पढ़ि जहौ, हाथ मोजि सिर फोरी ।
काम करो नहीं काम न ऐह, पाते कोरी कोरी ।
जो कह्यो पीती पीति चुकी सो, चिता ते मुख मोरी ।
आगे जानै धर्म सो कीजै, करि तन मन एक ठोरी ।
कोऊ काह को कहि साथी, मानु पिना सुत गोरी ।
रूपने करम आपने संगी, और भावना भोरी ।
सत्य सहायक स्वामि सुखद से, तेहु प्रीति जिय जोरी ।
नहिं तु फिर "प्रताप" हरि कोऊ, पात न पढ़िहि तोरी ॥४॥

पाठ ४५—धोमती राजराजेश्वरी विष्टोरिया की स्तुति

(निम्न प्रतापनारायण हृत)

दीक्षित = देख पड़ता है

नंदन = इन्द्र का पुत्र, लंदन नगर

